अक्षत

वीकेसी (आईआईएसयू/सीएमएसई) की अर्धवार्षिक हिंदी गृह-पत्रिका

अंक सं. 12, अप्रैल, 2022 - सितंबर, 2022

आज़ादी का अमृत महोत्सव

पुरस्कार वितरण समारोह – 2022 की झलकियां

संपादकीय

संरक्षक

डॉ. डी साम दयाल देव
निदेशक, आईआईएसयू

मुख्य संपादक

राजीव सिन्हा

संपादक मंडल

शशिभूषण तिवारी
संजय कुमार सिंह
लालमणि
प्रियदर्शन
उल्लास जोस
लक्ष्मी जी

प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों/रचनाकारों के अपने हैं। यह आवश्यक नहीं कि उनसे संपादक मंडल की सहमति हो।

वी के सी (आईआईएसयू/सीएमएसई)
वट्टियूरकाव,
तिरुवनंतपुरम - 695 013
दूरभाष - 0471 2569129

प्रिय मित्रों,

हर बार की तरह फिर से एक बार हमारी प्रिय गृह पत्रिका **'अक्ष'** के एक नए संस्करण को आपके सम्मुख प्रस्तुत करने में मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है। इस बार भी इस अंक में मनोरंजन और जानकारियों से भरे लेख, यात्रा वृत्तांत व कहानियां सम्मिलित की गई हैं। देखा जाए तो इस अंक को एक यात्रा वृत्तांत अंक के रूप में ज्यादा जाना जाएगा क्योंकि इस अंक में जहां समुद्र पार अगाती द्वीप व अंडमान की यात्रा का विस्तारपूर्वक वर्णन दिखता है वहीं उत्तराखण्ड व सूरत की यात्रा स्मृति से भी मन भाव-विभोर हो जाता है। मानव मन की व्यथा को दर्शाता 'क्या खोया क्या पाया' लेख हो या 'मायापुरी कथा' का मार्मिक विवरण या फिर समाजसुधार की प्रेरणा देते हुए फातिमा शेख का व्यक्तित्व परिचय हमारे मानस को झकझोर देता है। 'संगति का असर' कहानी व 'हिंदी बचाओ' कविता हमारे नए प्रयासों को दर्शाता है।

मित्रों! आशा करता हूं कि यह अंक भी पिछले अंकों की भांति आपको पसंद आएगा व आप अपने विचारों से हमें कृतज्ञ कर इस पत्रिका को और भी ज्यादा रुचिपूर्ण व मनमोहक बनाने में हमारी सहायता करेंगे।

धन्यवाद!

जय हिंद! जय हिंदी!

राजीव सिन्हा

पन्ने पलटने पर

03 संपादकीय
05 पिछली छमाही के दौरान संपन्न इसरो की सफल उड़ानें
07 मेम्स त्वरणमापी
10 मेरी अविस्मरणीय यात्रा
13 प्रकृति का पाठ
14 सूरत यात्रा
17 तस्वीर क्या बोलती है ?
20 महिला सशक्तीकरण में समाज का योगदान
22 शिक्षक
23 मानसिक स्वास्थ्य की अवधारणा
24 मेरे अगत्ती द्वीप के दिन
26 मायापुरी कथा
27 मेरी प्यारी दादी
28 मेरे जीवन की एक अविस्मरणीय घंटना
29 प्रशासनिक शब्दावली
30 टिप्पणियां
31 अंतरिक्ष शब्दावली
32 साहसी नारी की कहानी
34 क्या खोया?, क्या पाया?
35 हिंदी बचाओ
36 अंडमान का यात्रा विवरण
38 महि ला सशक्तीकरण में माध्यमों की भूमिका
41 फातिमा शेख: पहली मुस्लिम महिला शिक्षिका
42 एफ पी जी ए/असिक डिज़ाइन प्रवाह
44 शिक्षा: नव युग की नई चुनौतियां
46 स्वर्ग की यात्रा
48 वी के सी की हिंदी गतिविधियां
51 छमाही के दौरान वीकेसी में आयोजित अन्य कार्यक्रम
53 हिंदी पखवाड़ा समारोह-2022 के विजेताओं की सूची
58 पाठकों की ओर से
59 अधिवर्षिता

पीएसएलवी-सी53/डीएस-ईओ अभियान

इसरो के वर्क हॉर्स प्रमोचन यान की 53वीं सफलता और अंतरिक्ष विभाग की नई वाणिज्यिक शाखा, न्यू स्पेस इंडिया लिमिटेड (एनएसआईएल) के दूसरे उपक्रम, पीएसएलवी - सी53 ने 365 किलो डीएस-ईओ को अंतःक्षेपित करते हुए एक सटीक अभियान हासिल किया। 30 जून, 2022 को 155 किलोग्राम वजन का एनईऊएसएआर और 1.7 किलोग्राम वजन का स्कूब-1 (सभी सिंगापुर से) अपनी निर्दिष्ट कक्षाओं में 18:02 बजे (आईएसटी) पर श्रीहरिकोटा का दूसरा प्रमोचन मंच (एसएलपी) और सभी उपग्रहों को 568.51 x 580.62 किमी की कक्षा में 10.004º (एनएआईएनएस डेटा) के झुकाव के साथ स्थापित किया गया। यह वर्ष 2022 में इसरो की दूसरी उड़ान थी। डीएस-ईओ और एनईऊएसएआर को पीएसएलवी-सी53 के प्रदायभार कक्ष के अंदर एक ऊर्ध्वाधर-स्टैक फैशन में परिचित ग्रिडेड दोहरा प्रमोचन अनुकूलक (डीएलए) का उपयोग करके समायोजित किया गया था। तीनों उपग्रहों के कार्यरत्त होने की पुष्टि की गई। आरईआईएसएनएस एमकोआईवीए और आरजीपीडी पैकेज जैसी जड़त्वीय प्रणालियों ने मिशन के दौरान उत्कृष्ट प्रदर्शन किया और उपग्रहों के लिए सटीक कक्षाएं प्राप्त करने में योगदान दिया।

पीएसएलवी कक्षीय प्रायोगिक मॉड्यूल (पीओईएम)

उपग्रहों के अंतःक्षेपण के बाद, यान के पीएस4 चरण की समान रूप से महत्वपूर्ण भूमिका एक स्थिर पीएसएलवी ऑर्बिटल एक्सपेरिमेंट मॉड्यूल (पीओईएम) के रूप में थी, हालांकि जिसमें भारतीय अंतरिक्ष स्टार्ट-अप के दो, मेसर्स दिगंतरा एवं मेसर्स ध्रुव अंतरिक्ष, इन-स्पेस और एनएसआईएल से प्रवर्तित, और इसरो से चार सक्षम सहित छह प्रायोगिक प्रदायभार थे। पीओईएम लगभग तीन महीने की अवधि के लिए अन्य दीर्घकालिक प्रदायभार का समर्थन करेगा और अलग मिशन कंप्यूटर से सज्जित है,एस-बैंड टेलीमेट्री और टेलीकॉमैंड प्रणाली, सौर ऊर्जा प्रणाली और स्वदेशी ऑर्बिटल प्लेटफॉर्म एटिट्यूड नियंत्रक प्रणाली (ओपीएसीएस)। पीओईएम अपने जड़त्वीय संदर्भ के लिए चार सूर्य संवेदकों एवं एक मैग्नेटोमीटर का उपयोग करता है।

जीसैट-24 को एरियन-5 ने प्रक्षेपित किया

भारत के दूरसंचार उपग्रह जीसैट-24 को 23 जून, 2022 को कौरू प्रमोचन बेस,फ्रेंच गुयाना से आईएसटी 03.20 बजे एरियन-5 वीए-257 द्वारा भूतुल्यकाली स्थानांतरण कक्षा (जीटीओ) में सफलतापूर्वक प्रमोचित किया गया था। जीसैट-24 में 4180 किलोग्राम का उत्थापन द्रव्यमान एवं 15 वर्षों का मिशन जीवन है, अखिल भारतीय प्रसारण क्षेत्र डीटीएच आवेदन को पूरा करने हेतु, यह 24 केयू-बैंड संचार उपग्रह है। जीसैट-24 उपग्रह मिशन अंतरिक्ष सुधारों के आने के बाद न्यू स्पेस इंडिया लिमिटेड (एनएसआईएल) द्वारा मांग पर आधारित पहला मिशन है। एनएसआईएल ने पूरी उपग्रह क्षमता को मेसर्स टाटा प्ले, टाटा संस की एक डीटीएच शाखा को पट्टे पर दी है । जीएसटी-24 में ऑन-बोर्ड, आईआईएसयू द्वारा डिजाइन, विकसित और आपूर्ति की गई जड़त्वीय प्रणाली यूनिट (आईआरयू) एवं सौर व्यूह चालन संयोजन (एसएडीए) संतोषजनक प्रदर्शन कर रहे हैं।

प्रियदर्शन
वैज्ञा/इंजी-एसएफ, पीएसएमडी

मेम्स त्वरणमापी

1. प्रस्तावना/परिचय

किसी भी तकनीक की प्रासंगिकता तभी बनी रहती है जब यह समय की आवश्यकताओं के अनुरूप अपने-आप को ढाल सके तथा नित नवीन विशिष्टताओं का प्रादुर्भाव करते हुए अनुप्रयोगों के लिए अपने-आप को सटीक बना सके। विशेषकर, अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सदैव कम भार तथा छोटे आकार के तंत्रों, संवेदकों इत्यादि की आवश्यकता होती है।

अतिसूक्ष्म वैद्युत-यांत्रिक तंत्र (Micro Electro-Mechanical Systems) अथवा मेम्स (MEMS) प्रौद्योगिकी ने इन्हीं उद्देश्यों के साथ तकनीकी क्रांति लाई है। इस प्रौद्योगिकी की सहायता से सूक्ष्म आकार एवं कम भार वाले संवेदकों, प्रवर्तकों एवं तंत्रों की संकल्पना की जा सकी है तथा इन्हें मूर्त्तरूप दिया जा रहा है। इस तकनीक के माध्यम से इलेक्ट्रॉनिकी की दुनिया में विशेषकर क्रांति आई है।

हम सब जानते हैं कि प्रमोचन यानों तथा अंतरिक्ष यानों में नौसंचालन तंत्र प्रमुख अवयव होते हैं। इन तंत्रों में त्वरणमापी (Accelerometers) एवं घूर्णाक्षस्थायी (Gyroscopes) संवेदकों के रूप में विद्यमान रहते हैं।

मेम्स त्वरणमापी, पारंपरिक रूप वाले त्वरणमापियों की तुलना में अतिसूक्ष्म आकार तथा कम भार वाले त्वरणमापियों की श्रेणी में आते हैं। हमारे प्रभाग में ऐसे ही एक मेम्स त्वरणमापी का विकास किया जा रहा है।

2. मेम्स त्वरणमापी : संरचना

प्रस्तावित मेम्स त्वरणमापी सी-सॉ (seesaw) प्रकार का अंतरात्मक संधारित्र वाला त्वरणमापी है। इस त्वरणमापी में एक आयताकार पेंडुलम होता है जिसका आकार 3000 माइक्रोमीटर x1200 माइक्रोमीटर होता है। जैसा कि चित्र 1 में दर्शाया गया है, इस आयताकार प्लेट, जो कि 400 माइक्रोमीटर मोटाई का है, के दोनों तरफ 200 माइक्रोमीटर लंबे टार्सनल फ्लेक्सर होते हैं जो कि दूसरे छोर पर स्थैतिक प्लेट से बद्ध होते हैं। इन फ्लेक्सरों की अनुबंध काट 20 माइक्रोमीटर x 30 माइक्रोमीटर वाली होती है।

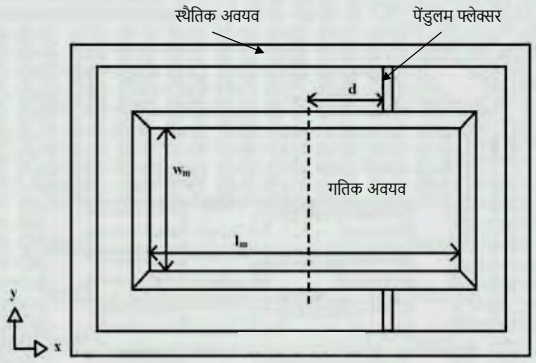

चित्र 1 : मेम्स त्वरणमापी की संरचना का ऊपरी दृश्य

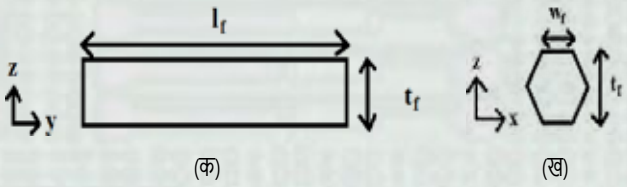

चित्र 2 : मेम्स त्वरणमापी के फ्लेक्सर के (क) पार्श्व दृश्य व (ख) अनुप्रस्थ काट का रेखाचित्र

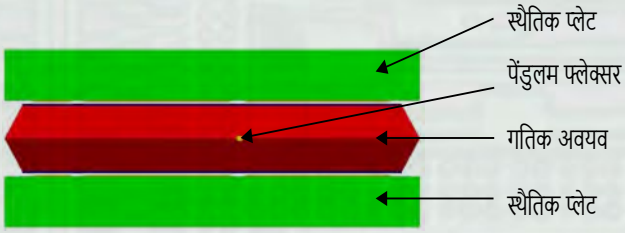

चित्र 3 : मेम्स त्वरणमापी की संरचना का सामने के दृश्य का रेखाचित्र

पेंडुलम प्लेट के स्वतंत्र छोर पर ज़्यादा से ज़्यादा विस्थापन मिल सके, इस हेतु फ्लेक्सर को प्लेट के मध्यरेखा से 300 माइक्रोमीटर दूर (चित्र 1 में 'd') अवस्थित किया गया है। पेंडुलम एक गतिक अवयव है जिसके दोनों ओर, अर्थात् ऊपर और नीचे, स्थैतिक प्लेटें अवस्थित होती हैं।

3. कार्यप्रणाली

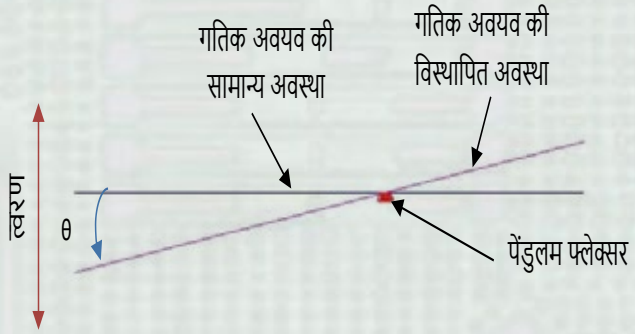

चित्र 4 : त्वरण के दौरान पेंडुलम के विस्थापन का रेखाचित्र

जब पेंडुलम की आयाताकार पट्टी के लंबवत् एक रैखिक त्वरण लगता है तो पेंडुलम प्लेट का विस्थापन होता है। इस विस्थापन को चित्र 4 में कोणीय विस्थापन (θ) के रूप में दर्शाया गया है। गौरतलब है कि वास्तविक परिस्थिति में यह विस्थापन अति लघु होता है। विशेषकर, बंदपाश वाले त्वरणमापियों में यह विस्थापन अत्यंत ही सूक्ष्म होता है।

पेंडुलम के विस्थापन को पेंडुलम प्लेट की दोनों सतहों पर अवस्थित पिक-ऑफ संवेदित करते हैं। वस्तुतः, सामान्य अवस्था में पेंडुलम की दोनों सतहों पर अवस्थित इलेक्ट्रोड स्थैतिक इलेक्ट्रोडों से युग्म बनाकर निर्धारित संधारिता (capacitance) प्रदान करते हैं। पेंडुलम के विस्थापन के फलस्वरूप स्थैतिक एवं गतिक प्लेटों के बीच की दूरी एक ओर कम हो जाती है तो दूसरी ओर बढ़ जाती है। इसके परिणामस्वरूप, संधारिता का मान एक ओर बढ़ जाता है तो इसी ओर घट जाता है। संधारिता के मानों में आया अंतर से ही विस्थापन का संसूचन होता है। हम जानते हैं कि यह विस्थापन त्वरण के परिणाम का समानुपाती होता है। अतः संधारिता में आया अंतर त्वरण का संसूचन करता है।

बंदपाश वाले त्वरणमापियों में पिक-ऑफ द्वारा संधारिता के अंतर से जनित धारा फीडबैक के रूप में टॉर्कर (Torquer) को दी जाती है जिससे उचित पुर्नसंतुलन बल पेंडुलम को उसकी पूर्वावस्था की ओर धकेलने की कोशिश करता है। विद्युत-धारा का यही मान त्वरण का परिमाप होता है।

उल्लेखनीय बात यह है कि पेंडुलम प्लेट के आकार की तुलना में फ्लेक्सर के अनुबंध काट में विमाएं बहुत छोटी होती हैं जिसके कारण फ्लेक्सर लचीला बन पाता है। सैद्धांतिक रूप से फ्लेक्सर का आकार जितना छोटा होगा, अर्थात् इसकी चौड़ाई तथा मोटाई जितनी कम होगी तथा फ्लेक्सर की लंबाई जितनी अधिक होगी, फ्लेक्सर उतना ही लचीला होगा तथा संवेदक उतना ही

संवेदनशील होगा। परंतु, व्यावहारिक रूप में, मेम्स विनिर्माण की क्रांतिक सीमाएं तथा फ्लेक्सर द्वारा बलों को सहन करने के लिए आवश्यक सामर्थ्य फ्लेक्सर के आकार को निर्धारित करते हैं। इसके लिए अभिकल्पना के स्तर पर हम विभिन्न आकारों वाले पेंडुलम एवं फ्लेक्सरों का तुलनात्मक अध्ययन करते हैं तथा आकार का निर्धारण करते हैं। प्रस्तुत अभिकल्प को चुनने के समय प्राकृतिक आवृत्ति को 785 हर्ट्ज (Hz) आँका गया था जो कि त्वरणमापी की कार्यप्रणाली के लिए उपर्युक्त माना गया है।

4. विनिर्माण

इन त्वरणमापियों की अभिकल्पना करने के बाद उचित फाउंड्री में इसका विनिर्माण किया जाता है। इस विनिर्माण में मेम्स संरचनाओं की प्रचलित निर्माण विधियों में से एक का चयन उस प्रक्रिया के गुण-दोष का अध्ययन कर तथा संरचना की व्यावहारिक आवश्यकताओं के अनुसार किया जाता है।

प्रस्तुत संरचना के विनिर्माण के लिए गीली रासायनिक एचिंग (Wet chemical etching) प्रक्रिया का चयन किया गया है तथा विनिर्माण सीएसआईआर (CSIR) की प्रयोगशाला सीरी (CEERI), पिलानी में किया गया। इसके लिए 400 माइक्रोन मोटाई वाले सिलिकन वेफर का इस्तेमाल हुआ। पिक-ऑफ एवं टॉर्कर के लिए संधारित्र प्लेटों के विनिर्माण के लिए सोने की परत को प्लेटिंग के द्वारा पेंडुलम पर संरूपित किया गया है।

5. विशिष्ट निर्देशांक

पेंडुलम आकार	: 3 मि.मी x 1.2 मि.मी. x 0.4 मि.मी.
फ्लेक्सर आकार	: 250 माइक्रो मी. x 20 माइक्रो मी. x 30 माइक्रो मी.
प्रथम प्राकृतिक आवृत्ति	: 785 Hz (785 हर्ट्ज)
बायस स्थिरता	: 1 मिली 'g' ($1g = 9.8\ m/s^2$)

6. उपसंहार

इस त्वरणमापी का विनिर्माण किया जा चुका है तथा व्यापक परीक्षण का काम जारी है। इस त्वरणमापी की सफलता से अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोगों के लिए नए द्वार खुल जाएंगे तथा इसका पारंपरिक त्वरणमापियों के बदले में प्रयोग किया जा सकेगा। इससे नौसंवहन तंत्र का भार तथा आकार काफी कम हो पाएगा। इसका फायदा हमें नीतभार को बढ़ाने में मिल सकेगा।

"जिनमें अकेले चलने का हौसला होता है, एक दिन उनके पीछे काफिला होता है।"

"मेहनत अगर आदत बन जाए तो कामयाबी मुकद्दर बन जाती है।"

"शिक्षा कभी भी व्यर्थ नहीं होती भले ही वो किसी भी तरह की ग्रहण की गई हो।"

मेरी अविस्मरणीय यात्रा

कमला जोशी
गौरव जोशी, वैज्ञा/इंजी-एससी,
आरक्यूए की माँ

भारत का एक छोटा सा राज्य है उत्तराखंड, जो पहले उत्तर प्रदेश का ही एक अंग था। उत्तराखंड के विकास और वहां की संस्कृति, परंपरा, बोली-भाषा एवं रीति-रिवाज़ को एक पहचान देने के लिए 9 नवंबर सन् 2000 को उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश से अलग होकर पृथक राज्य बना। तब से ही उत्तराखंड की संस्कृति, परंपरा व बोली-भाषा, को एक अलग पहचान मिली। उत्तराखंड एक बहुत शांत प्रदेश है। यहां के मूल निवासी बड़े शांत और धार्मिक प्रवृत्ति के होते है। यहां की प्राकृतिक सुंदरता, ऊंचे-ऊंचे झरने, बर्फों से ढ़ँके पहाड़, पहाड़ों की ऊंची-ऊंची चोटियां, सीढीनुमा खेत, खेतों की हरियाली देखते ही बनती है। ऐसा प्रतीत होता है जैसे ईश्वर ने धरती पर उतरकर खुद अपने हाथों से इसका श्रृंगार किया हो, उत्तराखंड को देव भूमि भी कहा जाता है। कहते है, यहां के कई गाँवों में आज भी लोग अपने घरों में सुरक्षा के लिए ताले नहीं लगाते हैं। इस भूमि में ईश्वर के साक्षात दर्शन का आभास होता है।

मुझे भी अक्तूबर, 2021 में एक बार केदारनाथ धाम की यात्रा के दौरान उत्तराखंड जाने का सौभाग्य मिला, जिसे मैं कभी नहीं भुला सकती। वैसे तो हमारे देश में चार बड़े धाम हैं जैसे उत्तर में बद्रीनाथ, दक्षिण में रामेश्वरम्, पूर्व में जगन्नाथपुरी और पश्चिम में द्वारिका हैं, वैसे ही उत्तराखंड में भी चार धाम हैं: केदारनाथ, बद्रीनाथ, गंगोत्री और यमुनोत्री। कहा जाता है कि हर हिंदू को अपने जीवन काल में इन चार तीर्थों की यात्रा अवश्य करनी चाहिए। मैंने अपनी यात्रा दिल्ली से हरिद्वार तक रेल व उसके आगे की यात्रा गढ़वाल मंडल द्वारा संचालित बस से की। दिल्ली से रात भर रेल की यात्रा कर हम सुबह पांच बजे

हरिद्वार पहुंचे, व छः बजे प्रातः हम बस से केदारनाथ धाम की यात्रा के लिए निकल पड़े। बस का सफर बड़ा अच्छा लग रहा था। घुमावदार सड़कें, सड़कों के दोनों ओर की सुंदरता, ऊंचे-ऊंचे पहाड़, हरियाली, झरनों का बहता पानी, व हिमशिखाएं (चित्र-1) मन को प्रफुल्लित कर रही थी। ठंड उतनी अधिक नहीं थी, मौसम सुहावना था। गर्म कपड़े पहने हुए हल्की-हल्की मीठी ठंड का आनंद लेते हुए हम आगे बढ़ रहे थे। यदि कभी भी केदारनाथ जाना हो तो अक्तूबर या नवंबर के महीने में जाना चाहिए, क्योंकि इन दिनों वहां भीड़ अधिक नहीं होती है, और वर्षा ऋतु की समाप्ति भी हो जाती है जिस कारण मौसम अच्छा रहता है।

वैसे तो केदारनाथ मंदिर के कपाट अप्रैल के महीने अक्षय तृतीया के दिन से खुलते हैं और दीपावली के तीसरे दिन (भैया दूज को) कपाट बंद हो जाते हैं। केदारनाथ धाम हमारे बारह ज्योर्तिलिंगों में से एक है, इसलिए यह एक पवित्र धार्मिक और आरथा का स्थल है। हम रूद्र प्रयाग, देवप्रयाग, धारीदेवी होते हुए प्राकृतिक सौंदर्य को निहारते हुए शाम को चार बजे सोनप्रयाग पहुंचे। सोन प्रयाग से आगे बसें और निजी वाहन नहीं जाते, इस कारण हमने स्थानीय प्रशासन द्वार स्वीकृत वाहन के माध्यम से सोन प्रयाग से गौरीकुंड की पांच किलोमीटर यात्रा पूर्ण की। हम अंधेरा होते-होते गौरीकुंड पहुंचे। रात हम गौरीकुंड में मंदाकिनी नदी के किनारे बने गढ़वाल मंडल के गेस्ट हाउस में रुके। रात के अंधकार व शांत वातावरण में नदी की आवाज़ (कल-कल) बहुत अच्छी लग रही थी। ऐसा मन हो रहा था कि पूरी रात नदी की धाराओं को निहारती रहूं। हम पूरी तरह थक चुके थे। रात्रि विश्राम के बाद हमें सुबह-सुबह केदारनाथ धाम की यात्रा करनी थी।

हम सुबह उठे, स्नान आदि कर हमने सुबह छः बजे यात्रा आरंभ की। गौरीकुंड से जब हमने केदारनाथ धाम पैदल यात्रा शुरू की उस समय हमारे साथ बहुत सारे श्रद्धालुओं की भीड़ थी जो देश के अलग-अलग स्थानों से आए थे। और सभी का उद्देश्य केदार बाबा के दर्शन करना था। कोई खच्चर से जा रहा था तो कोई पालकी से, पर हमने तो पैदल यात्रा करने का विचार बना लिया था। गौरीकुंड से केदारनाथ मंदिर की पैदल यात्रा 16 किलोमीटर की है। कई लोग हैलिकाप्टर से भी यात्रा कर रहे थे। हमें मंदिर पहुंचने, व दर्शन करने का बहुत अधिक उत्साह था। सारे रास्ते हम हर-हर महादेव का जयकारा लगाते जा रहे थे। हमारे आस-पास जो श्रद्धालु थे, उनमें भी बड़ा जोश और उमंग थी। सभी लोग जल्दी से जल्दी मंदिर पहुंचना चाहते थे। हमने यात्रा को सुगम बनाने व चढ़ाई अच्छी तरह चढ़ पाए, इसके लिए लाठियां खरीदी जिसके सहारे हम जल्दी मंदिर पहुंच सकें (चित्र-2)। हम धीरे-धीरे मंदिर की ओर बढ़ने लगे।

गौरीकुंड से केदारनाथ धाम की 16 किलोमीटर की यात्रा में पूरे रास्ते खाने-पीने की दुकानें, बैठने और आराम करने के लिए बेंचें, शौचालय, बरसात से बचने के लिए शेड, पीने के पानी की व्यवस्था, इत्यदि सब चीज़ों की उचित व्यवस्था थी। जब हमें थोड़ी थकान हो जाती तो हम बैठ कर कुछ खा-पी लेते। हर-हर महादेव का जयकारा लगाते हुए आगे बढ़ते जाते।

छः किलोमीटर की यात्रा तय कर हम भीमबलि पहुंचे, यहां तक की यात्रा बड़ी सुखद रही, लेकिन उसके आगे की यात्रा कठिन होती चली गई। फिर भी हमने हिम्मत नहीं हारी और चलते गए। बीच में खच्चरों की घंटियों और हैलिकाप्टर की आवाज़े हमें थोड़ा सुकून देतीं, हिम्मत देतीं और आगे बढ़ने को कहती। पैदल चलते-चलते हमें थकान हो रही थी। राह में वापस आनेवाले श्रद्धालुओं से हम पूछते अब कितने किलोमीटर की यात्रा शेष बची है? कब हमें मंदिर दिखाई देगा? वह भी हमें हिम्मत देते और कहते आराम से जाओ, मंदिर आने ही वाला है। भोले नाथ के दर्शन होने ही वाले हैं। इसी तरह पैदल चलते, रुकते, आराम करते हम शाम छः बजे मंदिर पहुंचे (चित्र-3)।

मंदिर को देख हमें बहुत अधिक प्रसन्नता हुई और हमारी सारी थकान मिट गई। बहुत अच्छा महसूस हो रहा था। चारों ओर हिमालय से घिरा, बीच में भोले नाथ का मंदिर बड़ा सुंदर लग रहा था। पहले हम होटल गए, जिसे हमने पहले से ही बुक कर रखा था। थोड़ा आराम कर फिर हम रात की आरती के लिए मंदिर के प्रांगण में पहुंचे। उस समय वहां का जो दृश्य था, उसका मैं शब्दों में वर्णन नहीं कर सकती। हर कोई शिव भक्ति में लीन था। हर-हर महादेव का जयघोष हो रहा था। उस समय ऐसा प्रतीत हो रहा था कि मैं किसी दूसरे लोक में पहुंच गई हूं। भगवान भोले नाथ भी हमारे ही बीच में है। होटल में रात्रि विश्राम के बाद सुबह हम नहा-धो कर फिर भगवान के दर्शन के लिए चल पड़े। जहां सारे श्रद्धालु पंक्ति बद्ध खड़े थे, हम भी पंक्ति में खड़े हो गए। जब हमारी बारी आई तब हमने मंदिर के अंदर जाकर शिवलिंग के दर्शन किए और जल चढ़ाया, पूजा अर्चना की।

केदारनाथ मंदिर में स्थापित शिवलिंग की स्थापना पाण्डवों ने की थी। पर मंदिर बनाने का काम आदि शंकराचार्य ने किया, उनकी प्रतिमा वर्तमान में मंदिर के बाहर लगाई गई है। मंदिर के बाहर पीछे की ओर एक विशाल शिला है, जिस शिला का नाम 'भीम शिला' है। जब 2013 में केदारनाथ धाम में आपदा आई थी तब इसी शिला ने मंदिर को इस आपदा से बचाया था। जो भी वहां जाता है, उस शिला की पूजा अवश्य करता है और उसके दर्शन करता है। सब जगह पूजा करने के पश्चात् हमने केदारनाथ मंदिर से 1 किलोमीटर की दूरी में ऊंचाई पर बने भैरव बाबा के दर्शन किए। कहां जाता है कि जो भी भक्त कैदारनाथ दर्शन के लिए आता है, उसकी यात्रा तब तक अधूरी मानी जाती, जब तक वह भक्त भैरव बाबा के दर्शन न कर ले।

मंदिर के चारों ओर साफ-सफाई एवं सुंदरता हमें मोह रही थी। आस-पास का सारा वातावरण आनंदित था। मंदिर के चारों ओर रहने, खाने, व विश्राम करने के लिए होटलों और धर्मशालाएं बनी हुई थी। किसी को भी कोई परेशानी नहीं थी। हमारी सरकार ने खास कर हमारे प्रधानमंत्री जी श्री नरेंद्र मोदी जी का इस मंदिर से खास लगाव है, वे समय-समय पर यहां आते रहते हैं। भोले के दर्शन करते हैं और यहां कि विकास कार्यों को देखते हैं। उनके शासनकाल में इस मंदिर का बहुत अधिक विकास हुआ है। सड़के, पानी, बिजली सब चीज़ों की अच्छी सुविधा की गई है। द्वितीय चरण का विकास कार्य अभी भी हो रहा है। बर्फ पड़ने से कार्य में अवरोध हो जाते हैं। विकास कार्यों में निरंतरता बनी हुई है। यह प्रधानमंत्री के ड्रीम-प्रोजेक्टों में से एक है।

सब जगह दर्शन करने के बाद प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद लेते हुए हम धीरे-धीरे नीचे उतरने लगे और शाम होते-होते हम पैदल गौरीकुंड पहुंचें। यह पैदल यात्रा हमने गौरीकुंड से आरंभ की थी और गौरीकुंड में ही पैदल यात्रा पूर्ण की। हमारी यह यात्रा बड़ी सुखद, आनंदित और प्रेरणादायक रही। मेरे जीवन में मुझे और कभी भी यहां आने का मौका मिले तो मैं अवश्य आऊंगी, और पैदल यात्रा ही करना चाहूंगी यही मेरी भगवान से प्रार्थना है, विनती है।

हर-हर महादेव !

प्रकृति का पाठ

रूपलता शर्मा डी
नवीन जी पाई की पत्नी,
वैज्ञा/इंजी-एसजी, एलएमडी

गुलाब का फूल गज़ब दिखता है।
पर क्यों साथ में काँटे होते हैं ?
क्या ये दर्शाते हैं कि अच्छा लक्ष्य प्राप्त करने के रास्ते में
मुश्किलों को पार करना पड़ता है। (i)
जब मोगरा खिलता है और महक पवन में फैलती है
क्यों मोगरा रंगीन नहीं होता ?
कथा ये दर्शाते हैं कि जीवन में अच्छे काम करने के लिए
ज़िंदगी रंगीन होना ज़रूरी नहीं होता है। (ii)
खूबसूरत कमल खिलता है झील में
कीचड़ में भी समुन्नत और निर्मल
क्या ये दर्शाते हैं कि ज़िंदगी में सभी को
परिवेश से प्रभावित नहीं होना है ? (iii)
गुलाब हो या मोगरा हो, कमल हो या कोई और फूल
हर फूल दो दिन में मुरझाता है।
क्या ये दर्शाता है कि ज़िंदगी कितनी ही छोटी हो
अच्छे काम करनेवाले सदैव स्मरण में रहेंगे? (iv)

लक्ष्मी जी
सहायक निदेशक (रा.भा),
वीएसएससी

सूरत यात्रा

यह लेख उस यात्रा के बारे में है जो कई प्रकार से मेरी ज़िंदगी का पहला अनुभव था। बात है मेरी पहली सरकारी यात्रा की। सूरत में आयोजित दूसरे अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र का प्रतिनिधित्व करते हुए यह यात्रा मैंने की थी।

कहानी की शुरुआत महीनों पहले हुई जब मेरी तदर्थ पदोन्नति के कुछ दिन बाद दूसरे अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में भाग लेने का निमंत्रण पत्र प्राप्त हुआ। पहले वह मात्र अधिकारियों के लिए था तो बाद में अन्य पदधारियों को भी उसमें शामिल किया गया। यह पाकर मैं पहले सोचने लगी कि जाऊं तो किसके साथ। अपनी शारीरिक स्थिति को देखकर मुझे लगा था कि कोई परिचित महिला अगर साथ दें तो काम चल जाएगा।

मेरी सहकर्मी श्रीमती राधम्माल ने तब कहा कि वे मेरे साथ आएंगी, क्योंकि अपनी अधिवर्षिता से पहले उन्हें यह आखिरी मौका था। शासकीय अनुमोदन के लिए राधाजी और मुझे जोड़कर तीन लोग नाम दिए थे तथा हम तीनों को अनुमोदन प्राप्त भी हुआ। लेकिन, कुछ दिन बाद स्वास्थ्य संबंधी कारणों से राधाजी पीछे हट गईं। रहे दो लोगों में मुझे ही फ्लाइट की अनुभूति मिल सकती थी और मैंने उसके लिए अनुमोदन ले लिया। तब तक लगभग पता चल चुका था कि वीएसएससी की ओर से सिर्फ मैं ही जा रही हूं। इसलिए मैं किसी की तलाश करने लगी जो मेरे साथ वहां रहेंगे। अनजान शहर में अकेली रहना किसको अच्छा लगता है?

आईआईएसटी की सहायक निदेशक (रा.भा.) श्रीमती सिमी असफ ने अपनी टीम में मुझे भी शामिल किया और उनके सहकर्मी डॉ. अशोक कुमार की सहायता से हमने रहने की जगह ढूंढ़ ली जहां 13 सितंबर से बुकिंग भी कर लिया। तब आई नई समस्या कि जब तक मेरा फ्लाइट अनुमोदित हुआ तब तक 13 तारीख की सारी टिकटें बिक चुकी थीं। अब मेरे पास दो ही विकल्प बचे थे। या तो 12 को अकेली चली जाऊं या फिर यात्रा रद्द कर दूँ। वीएसएससी की ओर से कोई और नहीं जा रहा था तो यात्रा रद्द करने का इरादा मैंने छोड़ दिया।

काफी खोज और तनाव के बाद पता चला कि 12 को महालेखाकार (एजी) के कार्यालय से एक ग्रुप जा रहा है, जिसमें मेरी सहेली राधिका भी शामिल थीं। इस तरह अचानक की गई अदला-बदली के साथ 12 तारीख को मैंने

अपनी यात्रा शुरू की। तिरुवनंतपुरम से बैंगलूर और वहां से सूरत की यात्रा। बैंगलूर तक की यात्रा में मुझे जहां बिठाया गया था वहां साथ में एक महिला थी जिनकी यह पहली विमान यात्रा थी। पहले से विमान यात्रा कर चुकी मुझे साथ पाकर उन्हें खुशी हुई। खुशी की एक और बात यह थी कि जो दूसरे व्यक्ति साथ बैठे थे वे इसरो के ही वैज्ञानिक और मेरे पति के दोस्त थे।

करीब तीन बजे के आस-पास हम सूरत पहुंचे और निजी कारणों से मेरा दिल बहुत खुश हुआ। उस दिन के लिए मेरी कहीं बुकिंग नहीं थी तो मुझे एजी के कार्यालय की टीम ने अपने साथ होटल लॉर्ड्स प्लाज़ा ले गई और राधिका तथा आशा के कमरे में एक और बिस्तर डलवाकर सहारा दिया।

उन्हें अपना प्रवेश पास लेना था तो मैं भी उनके साथ आयोजन स्थल पर गई और लौटते समय पास के बोंबे मार्केट में शॉपिंग के लिए हम चले। मार्केट की हर दूकान के सामने स्टूल था और चलते-रुकते एक शॉप से मैंने अपने लिए दो ड्रेस मटीरियल खरीदे। वापस जाने के लिए ओला ढूँढ़ते हुए राधिका आगे चली तो मैं उस मार्केट के सामनेवाले स्टेप पर बैठ गई और आशा मेरे साथ रही। हर स्टेप पर बड़े-बड़े कुत्ते पड़े थे। मुझे कुत्तों से काफी डर था। फिर भी, तब तक कोई समस्या नहीं आई जब तक किसी पिल्ले के रोने की आवाज़ सुनाई नहीं दी। वह सुनते ही एक-एक कुत्ता उठ खड़ा हुआ और भौंकते हुए मेरे दोनों ओर से कूदकर भागने लगा। डर के मारे मैं और आशा एक-दूसरे से चिपककर आँख बंद करके रहीं तो वहां के दूसरे लोग हसने लगे। उनके लिए तो यह रोज़ का तमाशा मात्र है। लेकिन, मैं तो डर से कांप रही थी। किसी तरह वहां से निकलकर ओला कार में होटल पहुंची।

अगले दिन जब आईआईएसटी की सहायक निदेशक (रा.भा.) और वहां के प्रोफेसर डॉ. अशोक कुमार पहुंच गए तो मैं एजी की टीम से विदाई लेकर उनके साथ जुड़ गई। लॉर्ड्स प्लाज़ा से बोगेनविला में पहुंची। वह तो एक अपार्टमेन्ट था जिसमें एक बैठने का कक्ष, सोने का कक्ष और बाथरूम के अलावा चाय आदि बनाने के लिए एक छोटी-सी रसोई जैसी जगह भी थी।

अगले दिन, तैयार होकर हम तीनों आयोजन-स्थल पर पहुंच गए। प्रवेश के कई द्वारों में से हमारा वाला ढूंढ़ना

पहली समस्या थी तो गाड़ी छोड़कर काफी दूर अंदर चलना दूसरी समस्या निकली। चलते-रुकते हम किसी तरह उस इन्डोर स्टेडियम के अंदर पहुंच गए। इतने बड़े आयोजन में, जहां हज़ारों लोग आते हैं, एक भी व्हीलचेयर की व्यवस्था न होना मुझे अजीब लगा। दुनिया में हर कोई एक जैसा नहीं होता है और इस बात की जानकारी हम सबको है। विकलांग शब्द को दिव्यांग बनाने से मात्र काम नहीं चलेगा। उसके लिए काफी सोच और समझ की आवश्यकता है। व्यक्ति से पूरे समूह के मनोभाव में परिवर्तन होना चाहिए।

केंद्रीय गृह मंत्री द्वारा समारोह का उद्घाटन किया गया। पूरे दिन हम वहां रहे तो देश के दूसरे कार्यालयों से आए अनेक हिंदी कर्मियों एवं हिंदी प्रेमियों से मुलाकात हुई। पास में बैठे रेलवे के कर्मचारी ने हमारी काफी मदद की।

सबेरे की तरह शाम को भी गाड़ियों को अंदर प्रवेश न देने से समस्या हुई और मेरे साथी सिमी तथा अशोक सर को काफी मुश्किलें झेलनी पड़ी ताकि कोई गाड़ी मिल सके। आखिर, एक ऑटो मिला और हम अपने अपार्टमेन्ट में पहुंच गए।

सूरत से मुंबई जाने के लिए हमें बड़े सबेरे एयरपोर्ट पहुंचना था। सामान के साथ हम तीनों को जाने के लिए कार

या दो-दो ऑटो की आवश्यकता थी। लेकिन, उस वक्त कोई भी गाड़ी मिलना काफी मुश्किल हो गया। आखिर, उस अपार्टमेन्ट के मालिक ने अपनी गाड़ी में हमें एयरपोर्ट तक छोडा और वह बिना पैसे के सेवा रही। सूरत का वह प्यार हमेशा याद रहेगा।

इस यात्रा का दूसरा महत्वपूर्ण पड़ाव तब था जब हम मुंबई पहुंचे। मुंबई हवाई अड्डे पर स्पाइस जेट के व्हीलचेयर प्रावधान के लिए काफी देर प्रतीक्षा करनी पड़ी। लेकिन, उसके बाद हम इसरो की छत्र-छाया में आ गए तो मामला आसान हो गया। मेरे दोस्त श्री सुजी चंद्रन ने इसरो संपर्क कार्यालय का नंबर दिया था और वहां से हमारे लिए कार खड़ी थी। हम अतिथि-गृह पहुंचकर नाश्ता करके निकले तो मैंने गाड़ीवाले से कहा कि मैं पहली बार मुंबई आ रही हूं। मुझे कुछ पता नहीं कि कहां जाना है। बारिश भी हो रही थी। वे हमें पाली हिल्स ले गए जहां फिल्मी सितारों के मकान एक के बाद एक दिखाई दिए। दिलीप कुमार से लेकर रणबीर कपूर तक के निवासों को देखते-देखते हम घूमे। बीच में थोड़ा शॉपिंग भी करके और खाना खाकर हम हवाई अड्डे वापस पहुंच गए। शाम की फ्लाइट से सकुशल तिरुवनंतपुरम आकर कार्यालयीन गाड़ी से घर के लिए रवाना हो गए।

हिंदी की ओर मेरा पहला पड़ाव हिंदी फिल्में थीं। आठ साल की उम्र में जिस महान कलाकार की अदायगी पर आकृष्ट होकर मैंने हिंदी की ओर पहला कदम रखा था, उस संजीव कुमार की जन्मभूमि सूरत एवं कर्मभूमि मुंबई में अपनी पहली कार्यालयीन यात्रा करके मुझे बहुत आनंद हुआ। इस यात्रा से मुझे जो आत्मविश्वास प्राप्त हुआ, निस्संदेह वह मेरी आगे की यात्राओं में संबल देगा।

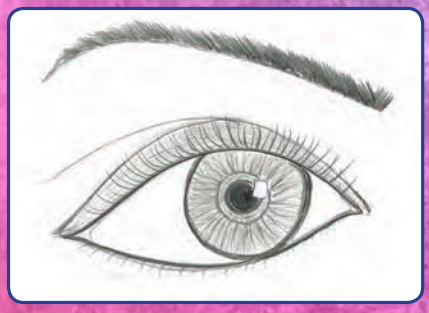

मास्टर श्रीहरि पी आर
कक्षा II
रघुनाथ के पी, वैज्ञा/इंजी-एसएफ,
एलवीआईएस के पुत्र

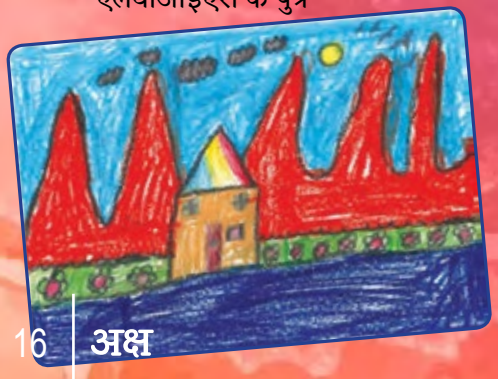

तस्वीर क्या बोलती है ?

प्रियदर्शन
वैज्ञा/इंजी-एसएफ, पीएसएमडी

भूमिका

प्रस्तुत तस्वीर को प्रथमदृष्टया देखने से हमें आधुनिक मानव जीवन की कड़वी सच्चाई दिखती जान प्रतीत होती है। मोटे तौर पर देखा जाए, तो प्रस्तुत तस्वीर हमें यह प्रदर्शित कर रही है कि किस तरह मानव प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन कर रहा है तथा दूसरा पक्ष कि इन प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग में तथा उससे जनित अवसरों को पाने में भारी विषमता है और आर्थिक-सामाजिक विरोधाभास है।

प्रस्तुत तस्वीर के केंद्र में जो चित्र दिख रहा है उसमें एक तरफ प्रकृति का नैसर्गिक सौंदर्य दिख रहा है तो दूसरी ओर प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध उपयोग से जनित विनाशलीला दिखाई पड़ रही है। इन सबके बीच विवश खड़ी धरती माता हमें मानो यह संदेश दे रही है कि "बस, अब बहुत हुआ हे मानव! कहीं तो अपनी लालसा, अपने लालच का अंत करो और रूककर तनिक देखो कि मैं कितनी प्रताड़ित हो रही हूं।"

इस केंद्रीय तस्वीर के ईद-गिर्द चार और चित्र हैं जो हमारे जीवन में घोर आर्थिक-सामाजिक विषमता की ओर इंगित करते प्रतीत होते हैं। पहली तस्वीर में जहां रैंपवॉक करती इतराती हुए मॉडल कन्याएं दीख रही हैं तो वहीं विस्थापितों का एक वर्ग मज़बूरी में लंबी यात्रा पर एक अनिश्चित की ओर अग्रसर दिख पड़ता है। दूसरी तस्वीर में समाज का एक वर्ग है जिन्हें शिक्षा के प्रचुर अवसर प्राप्त हैं और जो साधनों से सुसज्जित है, तो दूसरा विरोधाभासी वर्ग है जो बुनियादी सुविधाओं के अभाव से ग्रस्त है और अपनी प्राथमिक ज़रूरतों की पूर्ति के लिए संघर्ष करता जान पड़ता है। शिक्षा और विद्यालय भी उनके लिए भूख जैसी बुनियादी

समस्याओं के तत्कालीन समाधान का एक ज़रिया मात्र है। तस्वीर में हम देख रहे हैं कि समाज का एक वर्ग ज़रूरत से ज़्यादा कपड़े खरीदारी कर रहा है तो दूसरी ओर अधनंगापन सबको मुँह चिढ़ा रहा है। चौथी तस्वीर में एक ओर जहां विशिष्ट व्यंजनों का समारोह हो रहा है तो दूसरी ओर एक अदद रोटी के लिए आपस में प्रतिभागिता करती हुई एक बड़ी भीड़ है।

प्राकृतिक संसाधनों के दोहन और सामाजिक विषमता के कारण

सभ्यता की शुरुआत में हम मानवों ने अपनी बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्त्ति हेतु प्रकृति से मदद लेनी शुरू की और इसके संसाधनों का उपयोग किया। रोटी, कपड़ा और मकान के लिए प्रकृति का सहारा लिया। शुरूआती मानव अपनी आवश्यकताओं से संतुष्ट थे। परंतु समय के साथ वर्ग-विभेद होने लगा। समाज का एक वर्ग अपने लिए कुछ अधिक संजोकर रखने में विश्वास करने लगा और अभिजात्य एवं आमजन का विभेद शुरू हुआ। समय के साथ-साथ इन दोनों वर्गों की खाई बढ़ने लगी तथा आधुनिक काल तक इस खाई ने व्यवस्थात्मक तौर पर विकराल स्वरूप ग्रहण कर लिया।

मानव जनसंख्या के विस्तार के कारण वनों को काट-काट कर गृह-निर्माण, खेती एवं बाद में उद्योग-धंधों के लिए इस्तेमाल होने लगा। एक ऐसा समय आया कि अत्यधिक जनसंख्या की विशाल आवश्यकताओं की पूर्त्ति करने का दबाव प्रकृति पर पड़ने लगा। मानव की लालची प्रवृत्ति ने भविष्य के लिए तथा प्राय: अपनी सुख-सुविधा के संसाधनों के संग्रहण को बढ़ावा दिया जो इन संसाधनों के एकाधिकार की ओर अग्रसर हो गया।

साम्यवाद के खात्मे एवं बाज़ार आधारित पूंजीवाद ने इस आर्थिक विषमता को और बढ़ा दिया। अमीर और अमीर होने लगे, वहीं गरीब और गरीब होते चले गए। एक तीसरा वर्ग, जो मध्यम वर्ग कहलाता है, इन दो पाटों के बीच दोलन करता हुआ अपने भविष्य को प्रचुरता की तरफ ले जाने के लिए संघर्ष करने लगा तथा इस विषमता की विकरालता को महसूस करते हुए भी इसके लिए आवश्यक उपायों से कतराता रहा तथा इसी पूंजीवाद की लहर में बहता चला गया।

सामाजिक विषमता का प्रभाव

इस आर्थिक-सामाजिक विषमता ने समाज के सभी पहलुओं यथा रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा, स्वास्थ्य, रोज़गार इत्यादि क्षेत्रों में अपना प्रभाव छोड़ा। आज के दौरे में हम देखें, विशेषकर भारतवर्ष में, तो पाएंगे कि एक ओर पूंजीपतियों की संख्या बढ़ती जा रही है, वहीं गरीबी रेखा से नीचे जीवन-यापन कर रही जनसंख्या में या तो वृद्धि हो रही है, अथवा यदि कमी हो भी रही है तो बहुत धीमी गति से। देश की कुल संपति का 70% भाग देश के गिने-चुने अरबपतियों के हाथ में है तो बाकी पूरी जनसंख्या बाकी 30% का एक छोटा हिस्सा पाने में ही ज़िंदगी खपा देती है।

इस विषमता का एक बड़ा उदाहरण है कि जहां हमारे एक महानगर में एशिया की सबसे बड़ी झुग्गी-झोंपड़ी कॉलनी है तो वहीं से थोड़ी दूर पर देश का सबसे अमीर व्यक्ति अपने परिवार के साथ 27 मंजिला विशालकाय मकान में सारी सुख-सुविधाओं से लैस होकर रहता है। कोविड-19 जैसी महामारी में पूरे विश्व पर प्रभाव पड़ा। हमारे देश में भी कई करोड़ लोगों के रोज़गार छिन गए या कमाई में कमी हो गई। वहीं एक विशिष्ट उद्योगपति दिन-दूनी रात-चौगुनी प्रगति करता हुआ विश्व का दूसरा सबसे अमीर व्यक्ति बन बैठा।

हकीकत यह है कि आज भी एक वर्ग शिक्षा से वंचित है। किसी कारणवश स्कूल छोड़ने वाले करोड़ों बच्चे दुबारा स्कूल का मुँह नहीं देख पाते। रोज़गार के लिए मारमारी है तो स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी एवं कुपोषण से आज भी अनगिनत मौतें हो रही हैं। एक वर्ग जहां मोटापा तथा जीवनचर्या से जनित बीमारियों से ग्रस्त है तो दूसरा बड़ा वर्ग दो जून रोटी की जद्दोहद में व्यस्त है। सरकारी नीतियां तथा योजनाएं भी अक्सर अभिजात्य वर्ग की मदद ही करती जान पड़ती हैं। कई बार तो कानून भी इसी वर्ग की आवश्यकताओं के अनुरूप ही बनाए जाते हैं।

समस्याओं का समाधान

ऐसी परिस्थिति में आइए हम विचार करें कि इस

समस्या का समाधान कैसे हो। कैसे हम इस आर्थिक-सामाजिक विषमता की खाई को पाटने में सफल हो सकते हैं। कैसे हम प्राकृतिक संसाधनों का अनियंत्रित दोहन रोक सकते हैं। कैसे हम जल, जीवन, हरियाली, वन-संरक्षण, प्रकृति-रक्षण एवं प्रकृति-पोषण की ओर अपना ध्यान लगा सकते हैं। कहते हैं:

"मानव जब ज़ोर लगाता है, पत्थर पानी बना जाता है।"

वस्तुतः, सबसे बड़ी चीज़ जो उपरोक्त उद्देश्यों की प्रतिपूर्ति करा सकती है, वह है मानव की इच्छा-शक्ति। मानव जब चाह ले तो सब कुछ कर सकता है। ज़रूरत है कि वह समस्याओं एवं उसके कारणों के प्रति जागरूक हो जाए और उसके समाधान की ओर पूरी लगन से प्रयासरत हो जाए।

सबसे पहले, सामाजिक तौर पर यह जागरूकता होनी चाहिए कि जब हम अपने प्रतिनिधि चुनते हैं तो हमें यह अवश्य देखना चाहिए कि हमारा प्रत्याशी इन सब बातों के प्रति, संसाधनों के सदुपयोग के प्रयासों के प्रति तथा आर्थिक विषमता की समस्या के प्रति कितना सजग है। तदुपरांत, हमें अपनी सरकारों से भी इसके लिए आवश्यक कदम उठाने, कानून बनाने तथा उनका निरपेक्ष रूप से क्रियान्वयन कराने पर ज़ोर देना चाहिए। सरकारों तथा स्थानीय निकायों का भी महती दायित्व है कि वे समाज के बड़े वर्ग की ज़रूरतों तथा प्रकृति-संरक्षण की ज़रूरतों को ध्यान में रखकर अपनी नीतियां बनाए तथा क्रियान्वित करें। साथ ही-साथ प्रकृति संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहन योजनाएं ज़ोर-शोर से चलाए, ताकि व्यापक जन-भागीदारी को सुनिश्चित किया जा सके।

हमें यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि संसाधनों पर सबका हक हो और किसी का भी एकाधिकार कायम न हो पाए। रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा, स्वास्थ्य, उद्योग-धंधे, रोज़गार के समान अवसर सभी को मुहैय्या कराए जाने चाहिए ताकि इस विषमता को कम करने में मदद मिल सके। व्यक्तिगत, पारिवारिक और सामुदायिक स्तर पर हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हमारी नई पीढ़ी इन समस्याओं से अवगत हो तथा उनमें ज़िम्मेदारी का बोध हो कि वह अपनी पिछली पीढ़ी की गलतियों से सबक लेते हुए भविष्य में ज़रूरी सुधारात्मक कदम उठाएं। अपनी अगली पीढ़ी को ज़िम्मेदार, सजग तथा लगनशील बनाने का दायित्व हम सबका है।

उपसंहार

संसाधनों का दोहन तथा आर्थिक विषमता की वृद्धि कोई नई समस्या नहीं है। हमारा पूरा समाज इससे अवगत है तथा इसके दुष्परिणामों को पूरी तरह जानता-समझता है। ज़रूरी यह है कि हम इन दुष्परिणामों पर गहन विमर्श करें तथा वैयक्तिक एवं सामाजिक रूप पर इसके समाधानों की तलाश कर उसका क्रियान्वयन करें। हम सब को यह सोचना अवश्य चाहिए कि अगर हम प्राकृतिक संसाधनों का अनियंत्रित दोहन बदस्तूर जारी रखेंगे तो हमारी आनेवाली पीढ़ियों के लिए हम बहुत कम संसाधन छोड़ पाएंगे। इस सामूहिक समस्या का समाधान हमको सामूहिक रूप से करना पड़ेगा ताकि एक खुशहाल समाज, साधन-संपन्न समाज एवं वास्तविक रूप से समतामूलक समाज की रचना हो सके।

"मेहनत इतनी खामोशी से करो कि, कामयाबी शोर मचा दे।"

"निंदा से घबराकर अपने लक्ष्य को ना छोड़ें क्योंकि लक्ष्य मिलते ही अक्सर निंदा करने वालों की राय बदल जाती है।"

"सफलता पाने के लिए हमें पहले यह विश्वास करना होगा कि हम यह कर सकते हैं।"

महिला सशक्तीकरण में समाज का योगदान

डॉ शुभी गोयल
दिनेश कुमार अग्रवाल की पत्नी,
वैज्ञा/इंजी-एसई, पीएसएमडी

प्रस्तावः

दो शब्दों 'महिला' एवं 'सशक्तीकरण' से मिलकर बना यह विशेषण भाव - महिला सशक्तीकरण। इसका बलवान अर्थ यह है कि महिलाओं को उनकी भीतर छुपी हुई योग्यताओं और प्रतिभाओं से अवगत कराना। उन्हें और अधिक सक्षम बनाना। भारत और विश्व में सदियों से महिलाओं को हमेशा पुरुषों से कमज़ोर और उनके अधीन समझा जाता रहा है, परंतु आज यही महिलाओं को लेकर अनेक कार्य किए जा रहे हैं, जिससे महिलाएं ऊपर उभर कर, हर क्षेत्र में पुरुषों के बराबर ही नहीं, बल्कि बढ़कर जीत हासिल कर रही हैं। इस सृष्टि की रचना जैसे बिना स्त्री के संभव नहीं है, उसी प्रकार अब ये संपूर्ण रूप से निश्चित हो चुका है कि विश्व का विकास बिना स्त्री के सशक्तीकरण संभव नहीं है। इस सशक्तीकरण की प्रक्रिया में महिला के जन्म से उसके माता-पिता से लेकर उसको जीवन-भर में मिलते हर प्रियजन का योगदान होता है। उसी योगदान के बारे में ही हम आज चर्चा करेंगे।

महिला सशक्तीकरण की आवश्यकता

महिला सशक्तीकरण क्रिया को जानने से पहले हमें यह जानना ज़रूरी है कि यह आवश्यक क्यों है?

- प्राचीन काल से विश्व में महिला पर होते अत्याचार जैसे

सती प्रथा, बाल विवाह, भ्रूण हत्या, शारीरिक व मानसिक हिंसा, मासिक धर्म में एकांत वास, नव-विवाहित दुल्हन-अपहरण, नौकरी/व्यवसाय न मिलना, वेश्यावृत्ति, दहेज-प्रथा, यौन-अत्याचार इत्यादि।

इन सभी बुराइयों को दूर करने हेतु - महिला सशक्तीकरण ने जन्म लिया। इन सब से यही सिद्ध होता है कि महिलाएं हमेशा कमज़ोर वर्ग में तोली गई हैं। सशक्तीकरण सदा ही कमज़ोर को बलशाली बनाने का कार्य है। इसीलिए पुरुष सशक्तीकरण का जन्म नहीं हुआ। यह कदम समाज में आवश्यक है, ताकि महिला अपने ऊपर हो रहे अत्याचारों को शून्य बना कर अधिक बलशाली और शिक्षित हो सकें। इससे वो आत्मनिर्भर होकर अपने से जुड़े हर व्यक्ति और विश्व के विकास में हिस्सेदारी दे सकें।

महिला सशक्तीकरण में सामाजिक कदम

➢ सती प्रथा का अंत

यह एक बुराई थी जिससे महिलाओं को पति की मृत्यु के बाद अपने प्राण त्यागने पड़ते थे। नि:संदेह हो, इस प्रथा के अंत से महिला को अपना जीवन जीने की और अपनी श्वास पर अपना अधिकार रखने की स्वतंत्रता दी। यह प्रथा राजा राम मोहन रॉय द्वारा हटाने के लिए आंदोलन किया गया था, तब तत्काल गवर्नर-जनर लॉर्ड विलियम बेंटिक के आदेश से, 4 दिसंबर, 1829 को यह प्रथा समाप्त की गई थी।

➢ बाल - विवाह का अंत

इस प्रथा में बालावस्था में कन्याओं का विवाह अपने से दोगुनी - तीन-गुनी आयु के पुरुषों से कर दिया जाता था, जिससे उन्हें मानसिक एवं शारीरिक उत्पीड़न का शिकार होना पड़ता था। अब यह प्रथा समाज से लगभग लुप्त हो चुकी है। जिससे उनकी शिक्षा शारीरिक-मानसिक विकास आत्मनिर्भरता को बल मिला।

➢ भ्रूण हत्या

समाज एवं सरकार के प्रयासों से भ्रूण हत्या पर रोक लगाने से, महिलाओं की जनसंख्या में अधिक-से-अधिक बढ़ावा मिला, जिसके सीधे प्रभाव से महिला और पुरुष आज एक स्तर पर आकर खड़े हो गए हैं। इससे परिवार में कन्याओं को स्वीकारा गया, उन्हें भी बुढ़ापे का सहारा समझा जाने लगा और प्रयास किए जाने लगे कि उनका विवाह हो।

➢ तीन-तलाक पर रोक

यह एक धर्म की ऐसी गलत प्रथा थी, जिससे पति जब चाहें, बिना किसी स्पष्टीकरण के, सिर्फ तीन बार तलाक कहकर, अपनी पत्नी को तलाकशुदा कर सकता था। इससे महिला अपने-आप को शक्तिहीन और असुरक्षित महसूस करती थी। अब सुप्रीम कार्ट द्वारा इस पर रोक लगने से तीन तलाक के मामलों में 82% की कमी आई है और अब महिलाएं अपने आप को सुरक्षित अनुभव करती हैं।

➢ कार्यस्थल पर लैंगिक समानता

आज के समय में सरकारी और प्राइवेट सेक्टर दोनों ही महिलाओं की भर्ती को प्रोत्साहन दे रहे हैं जिससे महिलाएं रेलगाड़ी से लेकर हवाई जहाज़ तक चला रही है एवं जिससे उनके मनोबल का विकास दिन-प्रतिदिन होता जा रहा है। आज वो अधिक रूप से स्वतंत्र होकर अपने जीवन का निर्वाह कर रही है। कार्य-स्थल पर मिलने वाले मातृत्व-अवकाश और मासिक धर्म अवकाश से भी महिलाओं के आत्मविश्वास को बढ़ावा मिला है और उन्हें आज़ादी से जीने की शक्ति भी मिली है।

➢ मीटू अभियान (Metoo campaign)

2018-2019 में चर्चित हुआ यह सामाजिक आंदोलन था, जिसमें यौन-उत्पीड़न और यौन - हमलों का विरोध हुआ। इसमें अनेक महिलाओं ने अपने ऊपर हुए अत्याचारों पर बोली, चाहे वो उनके कार्यस्थल पर, घर पर, पड़ोस में, पब्लिक स्थल पर, स्कूल इत्यादि, कहीं भी घटित हुए हो। इसमें समाज के लोगों और अनेक बुद्धिजीवियों ने बढ़-चढ़कर उन महिलाओं की सहायता की और उन पुरुषों पर कार्वाई हुई जो विश्व में अभिशाप का स्वरूप थे।

➢ वैवाहिक बलात्कार (Marital Rape)

आज समाज महिलाओं के सशक्तीकरण को लेकर इतना आगे बढ़ गया है कि वैवाहिक बलात्कार को उच्चतम न्यायालय में एक अपराध घोषित करने के प्रयास में लगा हुआ है। जिससे महिलाएं भी स्वयं के निर्णय खुद लेने में सक्षम और स्वयं स्वाभिमानी अनुभव करेंगी। पाया जाता है कि देश में 30% महिलाएं पति द्वारा यौन हिंसा का शिकार हो रही हैं।

निष्कर्ष

इसमें कोई भी दो राय नहीं है कि समाज पूरी योग्यता से महिला-सशक्तीकरण में आगे बढ़ रहा है और हिस्सेदारी दे रहा है। महिलाओं को पहले से अधिक व्यवसाय, पहले से अधिक शिक्षा, पहले से अधिक वेतन, पहले से अधिक सुरक्षा मिल रही है। परंतु अब भी लड़ाई समाप्त नहीं हुई है। अब भी समाज को अनेक कदमों को उठाने की आवश्यकता है, जो हर वर्ग-जाति-धर्म की महिलाओं को शक्ति प्रदान करें। जिससे वह आत्म-निर्भर होकर, अपने साथ, अपने परिवार, वातावरण और देश के कल्याण मे भागीदार बनें। अगर आप भी एक महिला हैं, तो हर उस महिला की सहायता करें जो आज भी निर्बल है और सहायता की मांग कर रही है। आपके हर एक छोटे कदम से एक बड़े बदलाव का प्रारंभ होगा।

शिक्षक

मनौवर अन्सारी
वैज्ञा/इंजी-एससी,आईएसएमपी

अ, आ, इ, ई हमें पढ़ाकर ज्ञान का दीप जलाता शिक्षक
शिखर तक ले जाता, क्षमा की भावना रखता शिक्षक
अंधकार की ओर से प्रकाश की ओर ले जाता शिक्षक
जीवन के सही मूल्यों को सिखाता शिक्षक

शिक्षक हमारे जीवन का वह मोड़ है
जो अज्ञानता से ज्ञान की ओर ले जाता है
शिक्षक है तो हमें विश्वास है
मंज़िल हमारे पास है।

माता देती है जीवन, पिता देते हैं सुरक्षा
पर शिक्षक सिखाता है जीना जीवन
माँ की गोद में जीवन और ममता पनता है
पर शिक्षक की गोद में उत्थान पलती है

वक्त बदला, कई दौर गुज़रे
पर ना बदले शिक्षक का महत्व
जैसे सूर्य के बिना प्रकाश नहीं
वैसे शिक्षक के बिना जहान नहीं।

मानसिक स्वास्थ्य की अवधारणा

रोहित गुप्ता
वैज्ञा/इंजी-एसडी, एआईएस

गाँधीजी ने एक बार कहा था, "स्वास्थ्य ही वास्तविक धन है सोना और चाँदी नहीं" यह कथन हमारे जीवन में स्वास्थ्य के महत्व को इंगित करता है। लोग आमतौर पर अपने शारीरिक स्वास्थ्य पर अधिक ध्यान देते हैं और मानसिक फिटनेस को अनदेखा करते हैं। लेकिन यह भी सत्य है कि मानसिक स्वास्थ्य उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि शारीरिक स्वास्थ्य।

हम अपने विकसित मस्तिष्क के कारण अपने जीवन को नियंत्रित कर पाते हैं। इसलिए, बेहतर प्रदर्शन और परिणाम के लिए हमारे शरीर और दिमाग को चुस्त और स्वस्थ रखना हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है। आक्रामकता, नकारात्मक सोच, निराशा और भय ऐसे कारक हैं जो हमारी शारीरिक स्थिरता केस्तर पर बहुत प्रभाव डालते हैं। मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति हमेशा अच्छे मूड में होता है और संकट और खराब स्थितियों को आसानी से व्यवस्थित कर सकता है।

मानसिक स्तर, महसूस करने और सोच की सकारात्मकता को दर्शाता है जो जीवन का आनंद लेने की हमारी क्षमता में सुधार करता है। आजकल फिटनेस शब्द का इस्तेमाल मनोवैज्ञानिकों, स्कूलों और संगठनों द्वारा तार्किक सोच और तर्क क्षमता को दर्शाने के लिए किया जा रहा है। उसी तरह मानसिक अस्वस्थता स्वास्थ्य की अस्थिरता है, जिसमें सोच और व्यवहार में अप्रत्याशित परिवर्तन आता है।

तनाव या अन्य घटनाओं के कारण मानसिक बीमारी हो सकती है। यह अनुवांशिक कारकों, सामाजिक तनाव और खराब शारीरिक स्वास्थ्य से भी उत्पन्न हो सकती है। आज की इस भाग-दौड़ भरी ज़िंदगी में हर इंसान किसी न किसी परेशानी से जूझ रहा है अथवा वो ज़िंदगी में आगे निकलने की होड़ में है। ऐसी स्थिति में अपने दिमाग पर काबू कर पाना कोई सरल काम नहीं है। आज ज्यादातर युवा इसकी चपेट में आ रहे हैं और कितनी दवाएं जो कि बाज़ार में उपलब्ध है उसका सेवन कर रहे हैं ताकि वे अनिंद्रा, अवसाद, घबराहट आदि से बच सकें या राहत पा सकें। कितने ही अभिभावक बच्चों के वर्तमान मानसिक स्वास्थ्य से खुश नहीं है। कहीं ना कहीं हम आगे बढ़ने की इस प्रति स्पर्धा में सभी मानसिक स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं दे पा रहे हैं। कुछ महत्वपूर्ण बिंदुओं पर काम करके हम इससे उभर सकते हैं एवं इसका इलाज संभव है।

देश के एक ज़िम्मेदार नागरिक का कर्तव्य है कि वह मानसिक कार्यक्षमता पर भी ध्यान दे ताकि देश को विकसित करने के मिशन पर हम भी अपना योगदान दे सकें। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हमारे प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी हैं। जो मानसिक व शारीरिक दोनों स्वास्थ्य पर पूरा ध्यान रखते हैं व देश को भी सुचारू रूप से प्रगति की ओर ले जा रहे हैं।

मेरे अगत्ती द्वीप के दिन

साजन वी
सहायक इंजीनियर, आईएसपीई

एमवी भारत सीमा नामक जहाज़ में यह मेरा तीसरा दिन है। मैं पांचवीं मंज़िल के बालकनी में खड़ा था तो एक ओर से तालियां सुनाई दीं। वह थी कई दिनों की यात्रा के बाद किनारा दिखाई देने की खुशी की अभिव्यक्ति।

कल जहां सूर्यास्त हुआ था उसी दिशा में आज एक छोटा-सा द्वीप दिखाई देने लगा। मनसून का समय होने के कारण जहाज़ को सामान्यतया जहां लगाया जाता है वहां से करीब एक किलोमीटर दूर खड़ा किया जाएगा। ऊपर से नीचे तक डाली गई रस्सी की बनी सीढ़ी से उतरना है, क्योंकि द्वार खोलने से पानी अंदर आ जाएगा। कंधे पर बैग लेकर नीचे पालने की तरह डोलनेवाले नाव में जब पैर रखा तो एक आवाज़ सुनाई दी। मेरा पैर लगने से एक बक्सा टूट गया था। उसका मालिक, एक हट्टा-कट्टा आदमी था, अपने गुस्से को रोकने की कोशिश करते हुए बैठा था। मैं डरके मारे वहां बैठ गया। लगभग 5 फीट चौड़ाई के कंक्रीट पथ पर थोड़ा चला तो किसी ने आकर रोक लिया। कहां से, क्यों आदि कई सवाल पूछे गए। शायद नया चेहरा होने के कारण। मेरा पहचान पत्र देखकर ठीक है बता दिया। किसी और ने बताया कि वह केंद्रीय आइबी का आदमी है।

कितनी खूबसूरत जगह है। सफेद रेत में हर जगह सूरज को छिपाते नारियल के पेड़ खड़े हैं। ऐसा लगा कि लक्षद्वीप का मतलब सिर्फ लाख द्वीपों का समूह ही नहीं है बल्कि लाखों की प्राकृतिक सुंदरता भी है। नारियल के पेड़ों के बीचवाले रास्ते से उस भवन में पहुंचा जहां दूरदर्शन केंद्र स्थित था। उस यात्रा के दौरान उस इलाके में रहनेवाले लोगों द्वारा रेत को खोदकर बनाया गया चौकोर रूपी जलाशय दिखाई देता है। शायद पास के सब्जी के खेतों के लिए होगा।

अपने स्थान को ग्रहण करने आए मुझे देखकर पहले से वहां रहनेवाला साथी उसी जहाज़ में वापस जाने के लिए तैयार खड़ा था। अब मेरे स्थान पर कोई और आने तक यहीं मुझे रहना है। यह प्रसारण केंद्र दो कमरों तथा रसोई से युक्त एक घर है। कोच्चि में प्रसारण के लिए 10 किलो वाट पावर है तो यहां 100 वाट पावर से भी अधिक है। स्वतःचालित प्रसारण केंद्र होने पर भी प्रारंभ का समय होने के कारण मुझे यहां तैनात किया गया है। इस अगत्ती द्वीप की एक विशेषता

है। छः महीने पहले प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने इस केंद्र का उद्घाटन किया था। उस समय वे 10 दिन द्वीप में ठहरे, जिसको काफी प्रचार मिला था। उसी स्थान पर मैं अब अपने कार्य का श्रीगणेश कर रहा हूं।

मात्र 3 कि.मी. विस्तार के इस द्वीप में रहते समय मन में हल्की-सी घबराहट हो रही है। चारों ओर सागर की लहरों के गूँजने की आवाज़ ही सुनाई देती है। पहली बार घर से इतनी दूरी पर ठहर रहा हूं। नौकरी के पहले साल के अंदर इस तरह किसी यात्रा की उम्मीद नहीं थी।

अगले दिन कई लोग मिलने के लिए आए। डाकघर के कर्मचारी श्री बेनडिक्ट, सीपीडब्ल्यूडी के श्री सुरेंद्रन, केंद्रीय विद्यालय, हवाई अड्डा के कर्मचारी आदि। ये सब किनारे से हैं, जिसका मतलब है कोच्चि से। इस प्रकार हम एक ग्रुप बन गए। हर शाम हम इकट्ठे होकर फुटबॉल, शटल आदि खेलकर समुद्र में नहाकर लौटते। सागर में लगभग एक कि.मी. तक लगून है। अर्थात्, उसके आगे ही लहरें होती हैं। वहां तक चल सकते हैं। बिलकुल साफ दिखनेवाला पानी है। अजीब किस्म की मछलियां, मोतियों के पुंज से भरी सागर की गहराई। केंद्रशासित इस इलाके में डीजल के जेनरेटर से बिजली का प्रावधान है। गाड़ी कहलाने के लिए सिर्फ साइकिल और स्कूटर हैं। कौआ, बिल्ली, कुत्ता और रेंगनेवाले जीव यहां नज़र नहीं आते। टीवी वाले घर कुल 30 से ज्यादा नहीं। वहां टीवी खराब होने पर मरम्मत मैं ही करता हूं। इसी कारण से राशन की दूकान और परचून में मेरा खास खयाल रखा जाता था। समय मिलने पर डाकघर जाकर अपने दोस्त से मॉर्स कोड सीखता था। उस ज़माने में द्वीप से कोच्चि तक सूचनाओं का आदान-प्रदान इसी से होता था।

घर से दूर होकर अब छः महीने हुए। अब किसी भी तरह लौट जाने का विचार है। चावल मात्र मिर्ची का पाउडर, अंडा और अचार के साथ खाते-खाते ऊब गया। एक दिन कमरे में वहां के कुछ लोग आए जिनमें दो-तीन महिलाएं और बच्चे थे। ध्यान से सुना तो पता चला कि वे लोग मलयालम ही बोलते हैं। वे लोग टी वी देखना चाहते थे। उन्हें उसकी सुविधा बाहर दी गई। यहां की महिलाएं बहुत सुंदर हैं। शायद अरक्कल बीवी की अगली पीढ़ियों की होने के कारण होगा। नारियल और मछली यहां पैसा देने पर नहीं, मुफ्त मिलते हैं। यहां के चौराहे पर एक सरकारी बंगला हैं। पांच फीट चौड़ाई वाले कंक्रीट पथ पर इधर-उधर जानेवाले साइकलों की घंटी ही सुनाई देती है। हर समय प्रकाश उपलब्ध है। सायंकालीन सूरज की स्वर्णिम रश्मियों तथा समुद्री हवा ने इस जगह को खूबसूरत बनाकर रखा है।

एक दिन मैं अपने दोस्त के साथ चौराहे के निकट वाले डाकघर में बैठा था तो एक पत्र उन्होंने मुझे दिया। उसे लेकर मैं भागकर अपने कमरे में पहुंच गया। वह एक महीना पुराना था। दो महीने पहले मैंने जो पत्र पिताजी को भेजा था यह उसका जवाब था। यहां खत मिलने के लिए जहाज़ कोच्चि से पहुंचना चाहिए।

अब मुझे किसी भी तरह घर जाना है, अपने माँ-बाप से मिलना है। कुछ दिन बाद तार आया कि मेरे स्थान पर दूसरा कोई जल्दी आनेवाला है। एयरपोर्ट वाले दोस्त ने टिकट का प्रबंध किया। दस द्वीपों से युक्त लक्षद्वीप में सिर्फ यही एयरपोर्ट है। मात्र 16 सीट वाले छोटा-सा डोर्नियर विमान ज़मीन से उड़ने लगा। दोस्तों की विदाई तथा अगत्ती को ऊपर से देखकर मुझे काफी मज़ा आया। द्वीप को घेरते हुए लहरों का एक वलय। जहाज़ और छोटे नाव खिलौनों की तरह चलते दिखाई दिए। वह ज़माना ऐसा था कि न किसी के पास कैमरा था और न ही मोबाइल। हर चित्र को मन की किताब में मैंने अंकित कर लिया।

नरेश कुमार
प्रेम प्रकाश, वरिष्ठ तकनीकी सहायक-ए, आरक्यूए के पिता

मायापुरी कथा

जीवन क्या है?

जीवन एक रेखा है। रेखा की प्रथम बिंदु का नाम है जन्म। इसकी अंतिम बिंदु ही जीवन का अंत है अर्थात् मृत्यु। इन दो बिंदुओं में दूरी कितनी है? कहना संभव नहीं है। इन के बीच में अनगिनत बिंदुएं हैं।

प्राणी प्राण सहित लेकर आता है अपनी काया। तन त्यागना हो जाता है, उलझन बनती माया।। मायापुरी एक स्थान है। यह स्थान विभिन्नताओं और विशेषताओं का खजाना है। मायापुरी में एक कूप है जो जल से लबालब भरा है। कूप के ठीक मध्य में एक प्रतिमा है। प्रतिमा एक नग्न कन्या की है जिसकी आयु 5 वर्षों से अधिक नहीं मानी जा सकती है। कन्या कूप के जल स्तर पर खड़ी होकर, दोनों हाथ जोड़कर, आँखें खोलकर भगवान सूर्य को निहार रही है। सूर्य उदय होकर जैसे-जैसे आकाश में ऊपर उठते प्रतीत होता है, कन्या भी उसकी गति से घूमती है। सूर्य के केंद्र और कन्या के नयनों के केंद्र में अटूट संबंध लगता है। मध्य रात्रि में कन्या का सिर कूप के जल स्तर पर होता है। कन्या इस प्रकार घूमती है जैसे घड़ी में सूइयां घूमती हैं। कन्या का सिर यह इंगित करता है कि सूर्य कब कहां है। कन्या अपने तन के केंद्र (नाभी) पर घूमती रहती है। न तो सूर्य विराम में आता है न तो कन्या विराम में आती है। आखिर ये क्या है ? यह मायापुरी की माया है।

मायापुरी का कूप माया से भरा है। यह कूप करीब दो किलोमीटर की त्रिज्या की माप में माना जा सकता है। इसके जल स्तर में कभी किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं पाया गया। जल निकालने के लिए बाल्टी और रस्सी की ज़रूरत ही नहीं पड़ती है। कूप के किनारे एक फीट की गहराई से ऊपर जल भरा रहता है। जल चाहे जितना निकला जाए, जल स्तर स्थिर ही रहता है। कूप के किनारे हर बिंदु का जल अलग है। किसी एक बिंदु का जल मीठा है तो दूसरी बिंदु का जल नमकीन, तीसरी बिंदु का जल तीखा, चौथी बिंदु का खट्टा, पांचवीं बिंदु का जल काजू की ताकत देता है, छठी बिंदु का जल रोटी की ताकत देता है। अर्थात् बिंदुएं अनंत और जल का गुण भी अनंत है। एक व्यक्ति जो कूप का जल लाया और जलती हुई लकड़ी पर डाला, आग बुझ जाना चाहिए, परंतु आग धधक उठी है। ये जल नहीं हो सकता, ये तो किरासन हो गया। वह व्यक्ति जो जल लाया था उसने उस जल को पीया भी था। दूसरे दिन व्यक्ति का शरीर विशाल हो गया। गाँव के लोग उसे राक्षस समझ बैठे। उसे मारने के लिए लाठी लेकर दौड़े, परंतु वह विशाल माया अपने मुख से आग उगलने लगा, लोग आग की लपेट में भष्म होने लगे। महाभारत में भीम पुत्र घटोल्कच को

मेरी प्यारी दादी

राहुल गुप्ता
गिरराज गुप्ता का पुत्र,
वैज्ञा/इंजी-एसएफ, आरक्यूए

दुनिया में सबसे प्यारी मेरी प्यारी दादी
हमेशा मुझ पर प्यार, लाड़ और दुलार लुटाती मेरी प्यारी दादी
मुझको तरह-तरह के पकवान खिलाती मेरी प्यारी दादी
मुझे तरह-तरह के कपड़े और खिलौने दिलाती मेरी प्यारी दादी
मेरी हर ज़िद को पूरा करती मेरी प्यारी दादी
मुझे हमेशा ज्ञान की बातें सिखाती मेरी प्यारी दादी
मम्मी पापा के डाँट से बचाती मेरी प्यारी दादी
दोस्तों के बीच में लड़ाई होने पर सुलह करवाती मेरी प्यारी दादी
सुबह-शाम घुमाने ले जाती मेरी प्यारी दादी
मेरे साथ हर खेल खेलती मेरी प्यारी दादी
रामायण और गीता का पाठ पढ़ाती मेरी प्यारी दादी
मुझे ढेरों आर्शीवाद देती मेरी प्यारी दादी

कौन नहीं जानता है। कूप का जल केवल जल नहीं था, बल्कि जल ही जीवन का एक मात्र साधन था। हर प्रकार के फल का स्वाद, गुण और विटामिन युक्त था। लोग हवा और जल पर आश्रित थे। भोजन की कोई ज़रूरत नहीं थी।

कूप की गहराई का पता पाना कठिन था। कुछ लोगों ने गहराई मापने के लिए लंबे बांस, लंबी रस्सी और लंबी (छड़) का उपयोग किया। परंतु जल स्तर के 10 फीट की गहराई तक ही लंबे बांस सलामत रह पाया। 10 फीट के नीचे का भाग विलीन होका चला गया। कोई हिम्मत वाला व्यक्ति उस कूप में कुद गया। वह गहराई जानना चाहता था, लोग उसे कूदने से मना किया, परंतु उसने किसी की बात नहीं मानी। पूरी भीड़ उस हिम्मत वाले व्यक्ति को देखने के लिए आँखें बिछाई थे। परिणाम कुछ नहीं मिल पाया, वह व्यक्ति भी 10 फीट के नीचे गया होगा और विलीन हो गया होगा। अर्थात् कूप ही मुक्ति धाम था। कूप में कोई जलीय जीवों की कल्पना नहीं की जा सकती थी।

कन्या अपने केंद्र में शक्ति संग्रह कर रही थी और सूर्य के नयनों को अपने नयनों का गुलाम बना रही थी। कई वर्षों बाद कन्या औरत के रूप में बदल गई और एक को जन्म दिया। नवजात शिशु आनंद की मूर्ति था। वह शिशु किसी प्राणी के स्पर्श में नहीं आया। वह बालक केवल कन्या (माँ) की परिक्रमा में लगा रहा। सौ, दो-सौ वर्षों बाद अचानक कूप से एक भयानक आवाज़ उत्पन्न हुई और कूप विलीन हो गया। कूप के जल बिंदु अलग-अलग फल, फूल, अनाज, सब्जी के रूप में बदल गया। गन्ना मीठे रस से भरा था। नींबू खट्टे रस से भर गया। मिर्च तीखा हो गया जो आज भी है।

आप सोच रहे होंगे, कन्या और बच्चे का हाल क्या होगा? वही कन्या धरती माँ में बदल गई और नन्हा शिशु चाँद बन गया। जल बिंदु संसारिक वस्तुओं में बदल गई।

यह संसार मायापुरी है तथा हम लोग मायापुरी के एक जल बिंदु हैं।

मेरे जीवन की एक अविस्मरणीय घटना

राहुल गुप्ता
गिरराज गुप्ता का पुत्र,
वैज्ञा/इंजी-एसएफ, आरक्यूए

यह घटना मेरी एक यात्रा के दौरान घटित हुई थी जब मैं अपने परिवार के साथ तिरुवनंतपुरम से ग्वालियर छुट्टियां बिताने जा रहा था। हम घर से तिरुवनंतपुरम स्टेशन तक एक ऑटो से पहुंचे। हमारे पास बहुत सारा सामान था। जल्दबाज़ी में मेरी माँ अपना पर्स ऑटो में ही भूल गई। हम स्टेशन पर आकर केरला एक्सप्रेस में बैठ गए। रेलगाड़ी का स्टेशन छोड़ने का समय बीस मिनट के बाद था। जैसे ही हम रेलगाड़ी में बैठे मेरी माँ को याद आया कि वह अपना पर्स ओटो में ही भूल गई है। यह सुनकर मेरे पापा को बहुत गुस्सा आया क्योंकि पर्स में मोबाइल फोन, टिकट, पैसे और बहुत सारा कीमती सामान था। यह सुनकर हम बहुत घबरा गए क्योंकि हमें ना तो ऑटो का नंबर पता था और यहां पर रेलगाड़ी का स्टेशन छोड़ने का समय भी हो रहा था। मैंने अपने पापा से कहा कि वह माँ के मोबाइल पर फोन लगाए शायद ओटो वाले अंकल फोन उठाकर हमें वो पर्स वापस देने स्टेशन पर आ जाए। फिर मेरे पापा ने माँ के मोबाइल पर फोन लगाया और भाग्यवश ऑटो में बैठे यात्री ने ओटोवाले से कहा कि पर्स में किसी का फोन बज रहा है। ओटो वाले अंकल ने मोबाइल पर्स में से निकालकर मेरे पापा से बात की और कहा कि वह पर्स देने वापस स्टेशन पर आ रहे हैं। वे ऑटो में बैठे यात्री को वहीं उतारकर स्टेशन पर पर्स लेकर वापस आ गए। उन्हें देखकर हम सब लोगों ने राहत की साँस ली और उन्होंने माँ का पर्स मेरे पापा को दे दिया। हमने उन ऑटोवाले अंकल का बहुत-बहुत धन्यवाद किया। मेरे पापा ने उन ऑटो वाले अंकल को कुछ पैसे भी देने चाहे लेकिन उन्होंने लेने से मना कर दिया।

आज भी जब मैं और मेरी माँ उस घटना के बारे में सोचते हैं तो ऑटो वाले अंकल की अच्छाई और ईमानदारी भूले नहीं भूलती है। उनकी वजह से हम अपनी आगे कि यात्रा खुशी- खुशी कर पाए। मुझे इस घटना से यह शिक्षा मिलती है कि दुनिया में ऐसे ही लोगों के कारण ईमानदारी और अच्छाई ज़िंदा है। लेकिन दुनिया में कुछ ऐसे भी लोग है जो दूसरों का नुकसान करनेवाले के बारे में सोचते रहते हैं। इस घटना से हमें पता चलता है कि हमें जीवन में ईमानदारी और अच्छाई की राह पर चलना चाहिए।

प्रशासनिक शब्दावली / ADMINISTRATIVE GLOSSARY

Establishment - स्थापना
Establishment Section - स्थापना अनुभाग
Estimate - प्राक्कलन
Evaluation - मूल्यांकन
Examinee - परीक्षार्थी
Excellence - उत्कृष्टता
Excise duty - उत्पाद शुल्क
Execution - निष्पादन
Executive authority - कार्यपालक प्राधिकारी
Executive council - कार्य परिषद्
Executor - निष्पादक
Expenditure - व्यय
Experiment - परीक्षण
Expert - विशेषज्ञ
Explanation - स्पष्टीकरण
Explosive - विस्फोटक
Expression - अभिव्यक्ति
Extension of service - सेवावधि बढ़ाना
External Audit - बाह्य लेखापरीक्षा
Extra-curricular - पाठ्येतर
Extra duty allowance - अतिरिक्त ड्यूटी भत्ता
Extra grant - अतिरिक्त अनुदान
Fabrication - संविरचन
Facility - सुविधा
Factory - कारखाना
Faculty - संकाय
Fair copy - स्वच्छ प्रति
Family allowance - परिवार भत्ता
Family planning - परिवार नियोजन
Family welfare -परिवार कल्याण
Farewell address - विदाई भाषण
Favourable - अनुकूल
Fee - शुल्क
Feed back - प्रतिपुष्टि
Felicitate - बधाई देना
Fellowship - अध्येतावृत्ति
Festival Advance - त्योहार अग्रिम
Final contribution - अंतिम अंशदान
Financial - वित्तीय
Financial review - वित्तीय समीक्षा
Financial year - वित्त-वर्ष

टिप्पणियां / NOTINGS

1. Bring this to the notice of all staff concerned - इस पर सभी संबंधित कर्मचारियों का ध्यान दिलाया जाएं।
2. Circulate today itself - आज ही परिचालित करें।
3. Delay should be avoided in future - भविष्य में देरी न की जाएं।
4. Do the needful - आवश्यक कार्रवाई करें।
5. Expedite Action - शीघ्र कार्रवाई करें।
6. Timely compliance may be ensured- समय पर अनुपालन सुनिश्चित कर लिया जाए।
7. Issue today itself - आज ही जारी करें
8. As amended - यथा संशोधित
9. Explanation may be called for - स्पष्टीकरण मांगा जाएं।
10. Brief note is placed below - संक्षिप्त नोट नीचे रखा है।
11. Action may be taken accordingly - तदनुसार कार्रवाई की जाएं।
12. Draft for consideration - विचारार्थ मसौदा
13. The receipt of the letter has been acknowledged - पत्र मिलने की सूचना भेज दी है।
14. Director/ Controller may kindly see- निदेशक/ नियंत्रक कृपया देखें।
15. Kindly acknowledge - कृपया पावती भेजिए।
16. I have no objection - मुझे कोई आपत्ति नहीं।
17. I would like to see the papers - मैं कागज़ पत्र देखना चाहूंगा।
18. Please examine - कृपया जांच करें।
19. All concerned should note carefully- सभी संबंधित व्यक्ति इसे ध्यान से नोट करें।
20. Report/Papers may be awaited - रिपोर्ट/ कागज़ पत्रों की प्रतीक्षा की जाएं।
21. Seen, Thanks - देख लिया, धन्यवाद।
22. For information only - केवल सूचना के लिए।
23. Submitted for orders - आदेश के लिए प्रस्तुत है।
24. Needful has been done - ज़रूरी कार्रवाई कर दी गई है।
25. No immediate action - तत्काल कार्रवाई नहीं।
24. Discrepancy may be reconciled - विसंगति का समाधान कर लिया जाएं।
25. This may be treated as urgent - इसे अति आवश्यक समझा जाएं।
26. Delay in returning the file is regretted - फाइल को लौटाने में हुई देरी के लिए खेद है।
27. Administrative approval may be obtained - प्रशासनिक अनुमोदन प्राप्त किया जाएं।
28. Casual Leave applied for may be granted - आवेदित आकस्मिक छुट्टी दे दी जाएं।
29. For follow-up action - अनुवर्ती कार्रवाई के लिए।
30. Advice awaited - सलाह की प्रतीक्षा है।

अंतरिक्ष शब्दावली / SPACE GLOSSARY

Melting - पिघलना

Melting point - गलनांक

Mesospheric - मध्य मंडलीय

Metal - धातु

Semiconductor - अर्धचालक

Metallisation - धातुलेपन

Metatropy - भौतिक रूपांतरण

Meteorological Satellite - मौसम विज्ञानी उपग्रह

Metric Error - मीटरी त्रुटि

Micro processor - लघु प्रक्रमक

Micro beam - सूक्ष्म किरण पुंज

Mid Phase Synchronizer - मध्य कला तुल्यकालित्र

Miniature Circuit Breaker - लघु परिपद विछेदक

Misalignment - कुरेखण

Mode - विधा

Moisture - आर्द्रता

Minor frame - लघु फ्रेम

Misclosure - समापन अशुद्धि

Micropulsation - सूक्ष्म स्पंदन

Microscope - सूक्ष्मदर्शी

Microwave Circuit - सूक्ष्मतरंग परिपथ

Milestone - उपलब्धि

Milling machine - पेषन मशीन

Mimic diagram - अनुकरणीय आरेख

Microtherm - सूक्ष्मतापी

Molecular - आण्विक

Monofilament - एकतंदुक

Motor assembly - मोटर समुच्चय

Moulding - संचकन

Multi- lens Camera - बहुलेन्सी कैमरा

Multi level - बहुस्तरी

Multiplexer Efficiency - बहुसंकेतक दक्षता

Multi stage - बहुचरण

Multistrand - बहुधारी

Mutual inductance - अन्योन्य प्रेरकत्व

Magnetic current - चुंबकीय धारा

Malfunction - खराबी

Manufacture - उत्पादन

Memory allocation - स्मृति निर्धारण

सोनिया गुप्ता
गिरराज गुप्ता की पत्नी
वैज्ञा/इंजी-एसएफ, आरक्यूए

साहसी नारी की कहानी

यह कहानी मेरी एक सहेली की सच्ची कहानी है। इस कहानी से मैंने सीखा कि मुसीबत के समय हमें कभी हार नहीं मानना चाहिए। इंसान अपने साहस हिम्मत और काम करने के जज़्बे के साथ किसी भी मंज़िल को पा सकता है।

कहानी है ग्वालियर शहर में रहने वाली मेरी खास सहेली सीमा की। मैं और सीमा बहुत अच्छे दोस्त थे। हमने स्कूल से लेकर कॉलेज तक की पढ़ाई साथ में ही की थी। सीमा एक बहुत अच्छे स्वभाव की और हमेशा दूसरों की मदद करने के लिए तत्पर रहनेवाली एक लड़की थी। वह स्कूल और कॉलेज के हर कार्यक्रम में बढ़-चढ़कर भाग लेती थी। वह एक खुशदिल स्वभाव की लड़की थी। उसके परिवार में उसके मम्मी-पापा, भाई-बहन सब उससे बहुत प्यार करते थे। वह घर में सबसे बड़ी थी। उसका परिवार एक खुशहाल परिवार था। पर शायद भगवान को ये खुशी मंज़ूर न थी और उन्होंने सीमा और उसके भाई-बहन के ऊपर से उसके पिता का साया छीन लिया। इस हादसे ने उसके परिवार के लोगों के पैरों तले से मानो ज़मीन ही छीन ली हो। पिता के जाने का सीमा को बहुत बड़ा सदमा लगा था। इसके बावजूद वह अपनी माँ और घर का ध्यान बखूबी रख रही थी। इसके कारण वह अपनी पढ़ाई पर ध्यान भी नहीं दे पा रही थी। हालांकि घर खर्चे उसके मामा जी उठा रहे थे। पर अब सीमा का मन पढ़ाई

में नहीं लग रहा था। मैंने उसे बहुत समझाया कि वह अपनी पढ़ाई पर ध्यान दे, पर उसका सारा ध्यान घर के लोगों की चिंता में ही रहता था। एक दिन सीमा के मामा ने उसकी माँ को कहा कि वह सीमा की शादी कर दे, उनकी नज़र में एक अच्छा लड़का है जिसकी सरकारी नौकरी है। सीमा की माँ सीमा की शादी के लिए तैयार हो गई। इस तरह सीमा की शादी विकास से हो गई।

विकास एक बहुत अच्छा लड़का था। वह हमेशा सीमा का ध्यान रखता था और उसे हमेशा कॉलेज की पढ़ाई पूरी करने के लिए कहता था। सीमा ने भी विकास की बात मानकर अपनी ग्रेजुएशन पूर कर ली जिसमें उसके सास-ससुर ने भी उसका साथ दिया। सीमा के सास-ससुर हमेशा उसका बहुत ध्यान रखते थे और उसे अपनी बेटी मानते थे। जल्द ही सीमा एक बेटे की माँ भी बन गई। उसके परिवार में खुशहाली थी और सब कुछ अच्छा चल रहा था। समय बीतता गया, उसका बेटा तीन साल का हो गया था और अब वह दूसरे बच्चे की माँ भी बनने जा रही थी। सीमा अपने परिवार के साथ बहुत खुश थी। पर यह खुशी ज़्यादा समय की नहीं थी। शादी के सात साल बाद ही एक कार दुर्घटना में उसके पति की मृत्यु हो गई। सीमा पर तो मानो जैसे दुखों का पहाड़ ही टूट पड़ा था। जैसे मानो भगवान उसे खुशी केवल कुछ समय के लिए देता है और फिर दुख के सागर में धकेल देता है। पिता का साया तो पहले ही छिन गया था और अब पति ने भी साथ छोड़ दिया था। अब तो मानो सीमा ने जैसे जीने की उम्मीद ही छोड़ दी हो। उसे इस बात की चिंता सता रही थी कि अब उसके बच्चों का क्या होगा उसके परिवार का ध्यान कौन रखेगा। उसके सास-ससुर भी इस गम से उबर नहीं पा रहे थे। सीमा ने अपने बेटे और अपने होनेवाले बच्चे की खातिर अपने आप को जैसे-तैसे सँभाला और अपना जीवन जीने लगी। समय बीतता गया और वह जल्द ही दूसरे बेटे की माँ भी बन गई थी। सीमा की उम्र ज़्यादा नहीं थी और बच्चे भी छोटे थे तो एक दिन उसकी माँ और सास-ससुर ने उसके समाने दूसरा विवाह करने का प्रस्ताव रखा पर सीमा ने विवाह करने से इंकार कर दिया, उसने कहा अपने बच्चों और परिवार का ध्यान खुद रखेगी। परिवारवालों ने भी उसके साथ ज़बरदस्ती न करते हुए उसकी बात मान ली। एक दिन सीमा ने अपने सास-ससुर से कहा कि अब वह अपने परिवार की ज़िम्मेदारी खुद उठाना चाहती है। इसके लिए वह अब नौकरी करना चाहती है। परिवारवालों ने उसके इस फैसले में उसका साथ दिया। अब सीमा ने नौकरी के लिए परीक्षा देना शुरू कर दिया था। एक साल की कड़ी मेहनत और परिश्रम से सीमा को सरकारी नौकरी मिल गई थी। कहते है ना भगवान एक हाथ से लेता है तो दोनों हाथों से देता भी है। आज सीमा अपने परिवार की ज़िम्मेदारी उठाते हुए एक खुशहाल जीवन व्यतीत कर रही है।

आज भी जब मैं सीमा को देखती हूं तो सोचती हूं कि इस लड़की के साथ इतना बुरा होने पर भी इस लड़की ने अपनी हिम्मत ना छोड़ते हुए अपनी मेहनत से ज़िंदगी में एक बड़ा मुकाम हासिल किया। पति और पिता के न होते हुए भी उसने अपने परिवार को बखूबी संभाला। उसने अपने बारे में न सोचते हुए अपने परिवार के बारे में सोचा।

शिक्षा :- इंसान हिम्मत और मेहनत के साथ किसी भी परिस्थिति से लड़ सकता है और दूसरों के लिए प्रेरणा भी बन सकता है।

"अगर आप किसी विषय में महारत हासिल करना चाहते है तो इसे दूसरों को सिखाना शुरू कर दें।"

"प्रश्न पूछना और उसका जवाब जानने की चेष्टा करना, एक विद्यार्थी का खास लक्षण है।"

"शास्त्र ज्ञान शस्त्र ज्ञान से बहुत अधिक असरदार, शक्तिशाली और प्रभावशाली होता है।"

क्या खोया?, क्या पाया?

गौरव जोशी
वैज्ञा/इंजी-एससी, आरक्यूए

सृष्टि के रचयिता ने जब सृष्टि की रचना की, कदाचित् तभी इसके अंत की पराकाष्ठा भी लिख दी थी, जिसका वर्णन हमारे पौराणिक ग्रंथों में स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है। विगत 200-300 वर्षो में मानव जाति ने अभूतपूर्व उपलब्धियां हासिल की है, जिसने मानव के जीवन- यापन के तौर तरीकों को बदल कर रख दिया है। एक तरफ आधुनिक सुख-सुविधाएं आज के मानव के लिए अपने जीवन को सुखद और सरल बनाने का एक माध्यम बन चुकी है, वहीं दूसरी तरफ सुखद और सरल दिखने वाली ज़िंदगी ने आज के मानव को अंदर से खोखला बना कर रख दिया है। इक्कीसवीं सदी का मानव अपनी युवावस्था में ही बुढ़ापे से ग्रस्त दिखाई पड़ता है जिसमें बुढ़ापे के अनेक लक्षण जैसे कि शारीरिक दुर्बलता, तनाव, मधुमेह, हृदय रोग एवं उच्च रक्तचाप आदि रोग प्रमुख हैं। हमारा देश भारत, अपने अखंड और अक्षुण्ण, गौरवशाली इतिहास में महा मानवों का नाम स्वर्ण अक्षरों में सुशोभित किए हुए है, जिन्होंने अपनी युवावस्था में चारो दिशाओं को हिला देने वाले साहस का परिचय दिया था। इनमें महाराष्ट्र के छत्रपति शिवाजी महाराज, राजस्थान के वीर राजपूत आदि राजवंश अपना नाम सुशोभित किए हुए हैं, जो कि अपने शारीर के भार से तीन गुना भार के साथ युद्ध करने के कौशल में परिपक्व थे। ऐसी वीर गाथाएं आज के नौजवानों के लिए केवल एक कल्पना मात्र बनकर ही रह गयी है।

आदिकाल में जब भरत खंड़, एक सम्पंन राष्ट्र हुआ करता था, तब मौर्य वंश के अंत के साथ एक काले युग की नीव पड़ी जिसने हमारे राष्ट्र में अनेक कुरीतियों जैसे कि सती प्रथा, तंत्र विद्या आदि को जन्म दिया। इस काले युग ने ना केवल आम आदमी को प्रभावित किया अपितु एक खुशहाल और समृद्ध राष्ट्र की बुनियाद में दीमक रूपी कपट और लालच की भावनाओं को भी जन्म दिया, जिसके कारण समाज के रक्षक ही लालच के लोभ में समाज में अनाचार और भ्रष्टाचार का प्रवाह करने लगे। उस आदिकाल में केरल प्रांत के एर्णाकुलम नगर में एक महान आत्मा ने आदि गुरु शंकराचार्य के नाम से जन्म लिया। आदि गुरु शंकराचार्य, एक विद्वान होने के साथ-साथ एक समाज सुधारक भी थे जिन्होंने हमारे भटके हुए समाज को एक नयी दिशा दिखाई और हमारे गौरवशाली इतिहास को वापस एक सूत्र में पिरोया। साथ ही, भरत खंड के स्वर्णयुग गुप्त वंश और राजा हर्षवर्धन के शासन काल की ठोस नींव भी रखी।

वर्ष 2021 में ईश्वर की असीम कृपा से मुझे आदि गुरू शंकराचार्य द्वारा स्थापित केदारनाथ और बद्रीनाथ धाम के दर्शन करने का असीम सौभाग्य प्राप्त हुआ। बद्रीनाथ धाम

उत्तराखंड के चमोली जिले में स्थित भगवान विष्णु को समर्पित एक तीर्थ स्थल है। मौर्य वंश के अंत के बाद, आदि गुरु शंकराचार्य ने चौरासी सम्प्रदायों में विभाजित हमारे समाज को एक सूत्र में पिरोया तथा बद्रीनाथ के निकट व्यास गुफा में अपनी साधना से भागवत् गीता एवं उपनिषदों आदि को सरल भाषा में आम जन मानस के लिए प्रस्तुत कराया।

मेरी बद्रीनाथ यात्रा में जब मैं माना गाँव पहुंचा, जो कि आज के भारत का सीमावर्ती अंतिम गाँव है, तब मैंने न सिर्फ सरस्वती नदी को विलुप्त होते देखा ब्लकि व्यास गुफा के दर्शन करने का भी सौभाग्य प्राप्त हुआ, उस एक ही पल ने मुझे ज्ञान की असीम शक्ति का एहसास करा दिया था, जो ऋषि मुनियों की साधना से पवित्र होकर आसपास के वातावरण में एक सात्विक शक्ति का संचार कर रही थी।

किंतु आज के समाज की यही विडंबना है कि जो बद्रीनाथ धाम, आदि गुरु शंकराचार्य ने भविष्य की पीढ़ी को धरोहर के रूप मे सौंपा था, आज वहां पर औद्योगीकरण के कारण जोशीमठ से लेकर बद्रीनाथ तक भूस्खलन की आपदा ने उस पवित्र स्थान के अस्तित्व को अंत के कगार पर लकार खड़ा कर दिया है। आज जोशीमठ, जो कि जोशी वंश के नाम से विख्यात एक नगर है, के स्थानीय निवासी पलायन करने को विवश हो चुके है। बांध और सुरंग निर्माण ने मानो पूरी जोशीमठ पर्वत श्रृंखला को अस्थिर करके रख दिया है।

ऐसा भी नहीं हैं कि यह हिमालय के प्राकृतिक रूप से छेड़छाड़ की पहली घटना हो, इतिहास में हिमालय से छेड़छाड़ की अनेकों घटनाए विधमान है, जब अंतर्राष्ट्रीय दबाव में आकार, हमारी सरकार ने देश की संसद के माध्यम से देशवासियों को अवगत कराया था कि किस प्रकार थल सेना कप्तान श्री एम एस गिल के नेतृत्व में एक असफल अभियान में, परमाणु यंत्र नंदा देवी नामक हिमालय श्रंखला मे खो गया था, जिसमें हिरोशिमा नागासाकी में उपयोग किए जितना प्लूटोनियम नामक परमाणु रसायन था, उस यंत्र को खोजने के अथक प्रयास किए गए किंतु आज भी वह यंत्र नंदी देवी हिमालय श्रृंखला के किसी हिम खंड में दबा पड़ा है।

कदाचित इस लेखन का शीर्षक "क्या खोया?, क्या पाया?", आज के अंधाधुंध औद्योगिकरण के लिए एक सही कटाक्ष जान पड़ता हैं।

प्रेम प्रकाश
वरि.तकनीकी सहायक-ए, आरक्यूए

हिंदी बचाओ

सधवा औरत की पहचान है उसकी बिंदी।
भारत माँ की पहचान है हमारी हिंदी।
विधवा के लिए कोई साज नहीं है।
हिंदी से बढ़कर भारत का कोई ताज़ नहीं है।
संपूर्ण विश्व में आई हरियाली।
हिंदी अनेक भाषाओं को जन्म देने वाली।
यह तो सभी को समझ आता है।
यही धरती हमारी माता है।
हर इंसान की जाग उठती इच्छा।
प्रथम आऊं, जब भी हो परीक्षा।
प्रथम आने के लिए सबके गले लगाओ।
पहचान की आधार हेतु, हिंदी को अपनाओ।
अंग्रेज़ी बोलने से अपना अपमान है।
हिंदी बोलने से सबका सम्मान है।
हिंदी बचाओ तो भारत की बिंदी बचने की है आस।
यह बोल रहा भारत देश का शुभचिंतक प्रेम प्रकाश।

लता.बी
वरि. परियोजना सहायक,
आईआईएसयू क्रय

अंडमान का यात्रा विवरण

"अंडमान की एक खूबसूरत छोटी यात्रा....". मैं इसे एक छोटी यात्रा कहती हूं क्योंकि यह पांच दिनों की यात्रा है। इस पूरी यात्रा को व्यक्त करना मेरे लिए आसान न होगा, क्योंकि अंडमान और निकोबार द्वीप समूह की सुंदरता को शब्दों में कहना कठिन है।

हम एलटीसी यात्रा के रूप में कुछ महीनों से अंडमान जाने की योजना बना रहे थे। इस यात्रा में मेरे परिवार से मैं, मेरे पति और हमारी दो बेटियां शमिल थे। हमारे परिवार के संग सहकर्मियों के परिवार सदस्य भी हमारे साथ थे। हमारी यात्रा त्रिवेंद्रम हवाईअड्डे से सायंकाल की एयर इंडिया की फ्लाइट से प्रारंभ हुई। हमारी फ्लाइट को चेन्नई एयरपोर्ट पर करीब 2 घंटों के लिए रुकना पड़ा। यह समय हमने गाना गुनगुनाकर, गाना सुनकर और चेन्नई की सुंदरता देखकर व्यतीत किया। अगले दिवस हम पोर्टब्लयर अंतराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उतरे। हम पोर्टब्लयर में 'होटल हिल व्यू' में ठहरे थे। होटल में कुछ देर आराम करने के पश्चात् चाय-नाश्ता करके हम कॉबनी का केव बीच, मानव विज्ञान संग्रहालय, रॉस द्वीप (नेताजी सुभाष चंद्र बोस आइलैंड) और सेलुलर जेल जैसे पोर्टब्लेयर के स्थानीय पर्यटन स्थलों को देखने के लिए निकले।

सर्वप्रथम हम पोर्ट ब्लयर के जनरल एंथोपोलॉजिकल म्युज़ियम घूमने गए। संग्रहालय में प्रति व्यक्ति 10 रुपए और कैमरा के लिए 20 रुपए का शुल्क था। संग्रहालय में अंडमान की संस्कृति की असीम सौंदर्य को दर्शाया गया है। यहां अंडमान के आदिवासी गोत्रों द्वारा उपयोग किए जाने वाले हथियार, मिट्टी के तरह-तरह के बर्तन, देशी उपकरण, वेश-भूषा, माला आदि प्रदर्शन के लिए रखे गए है। इनको देखकर मालूम पड़ता है कि इन वर्षों में इन लोगों ने अपने आपको बदलती दुनिया की बदलाव के साथ खुद को भी ढाला है।

हमें स्थानीय आदिवासी गॉवों में जाने और इन द्वीपों के दिलचस्व इतिहास को करीबी से जानने का अवसर प्राप्त हुआ। कॉबनी का केव बीच तट अंडमान द्वीप समूह में काफी लोकप्रिय स्थान है। यहां पर्यटकों का आना-जाना लगा रहता है। यहां के स्थानीय छोटे-छोटे दुकानदार हिंदी, अंग्रेजी, फ्रेंच, रूसी आदि भाषाओं के जानकार हैं। यहां का मुख्य आकर्षण

जेट स्की सवारी, नाव की सवारी और स्पीड बोट की सवारी है। यहां से हमने स्थानीय सी फूड़ प्लैटर खाया जो हमारे लिए एक नया अनुभव था। इसमें सूप, लोब्सटर, टूना मछली, केकड़ा, प्राउंस जैसे कई सारी मछलियों और हरी सब्जी को उबाला हुआ प्लेटर, नारियल पानी और नारियल की मलाई से बने कुछ स्वादिष्ट व्यंजन भी थे।

अंड़मान के समुद्र की सुंदरता देखते ही बनती है, जिनमें से एक हैवलॉक बीच है। कई सारे अन्य समुंद्री तट यहां मौजूद हैं, उनमें से एक राधानगर बीच है। वहां शाम की सुंदरता मनोरम थी। राधानगर बीच एशिया के सबसे सुंदर बीचों में छठे स्थान पर है। इस बीच के दोनों तरफ दो अलग दुनिया को हम महसूस कर सकते हैं। एक तरफ पेड़ ही पेड़ और दूसरी ओर नीलिमा से चमकता समुद्र जो पारदर्शी दिखाई देता है। यहां कई तरह की एडवेंचर गतिविधियां हैं जिनमें- एडवेंचर एक्टिविटी, स्कूबा डाइविंग, स्नोर्केलिंग, ट्रेकिंग, सी ब्लॉक आदि का अनुभव ले सकते हैं।

हमारी अगली मंजिल 'सेलुलर जेल ' थी।, यह एक औपनिवेशिक जेल है, जो अंडमान निकोबार की राजधानी पोर्ट ब्लेयर में स्थित है। अंग्रेजों के समय इस जेल को कालापानी के नाम से भी जाना जाता था। प्रथम स्वतंत्रता संग्राम अर्थात् सन् 1857 के सिपाही विद्रोह के समय स्वतंत्रता सेनानियों को कैद करने के उद्देश्य से इस जेल का इस्तेमाल किया जाने लगा। इतिहास के पन्नों से हम सेलुलर जेल को कभी अनदेखा नहीं कर सकते, पर आज यह एक राष्ट्रीय स्मारक के रूप में विख्यात है। यहां के कैदियों की यातनाओं की कहानियां सुनकर, उनकी दुविधा की कल्पना करके मेरे रोंगटे खड़े हो गए। भारत के स्वतंत्रता सेनानी जो यहां कैद थे उन सबको नमन करती हूं।

रात को होटल पहुंचकर आराम करके सुबह का नाश्ता करके हम अगले स्थान की ओर रवाना हुए। आज हम एतिहासिक रॉस द्वीप (नेताजी सुभाष चंद्र बोस आइलैंड) और नार्थ बे द्वीप की यात्रा के लिए तेयार हैं। रॉस द्वीप पोर्ट ब्लेयर से लगभग 2 कि.मी. पूर्व की ओर है और यहां तक पहुंचना बहुत आसान है। यह द्वीप महज 0.3 वर्ग किलोमीटर का द्वीप है जिसे अब भारतीय नौसेना द्वारा नियंत्रित किया जाता है। यहां प्रवेश करने के लिए प्रत्येक आगंतुक को साइन-इन करना आवश्यक होता है। यहां पर उन्नीसवीं सदी के ब्रिटिश राज के खंडहर हैं। यह द्वीप भारत के एक काले अध्याय के गवाह के तौर पर मौजूद है। यहां कोई मानव निवास नहीं हैं। कुछ दशक पहले, रॉस द्वीप लगभग 80 वर्षों तक भारतीय दंड बंदोबस्त का मुख्यालय था। इसमें कब्रिस्तान के खंडहर हैं, बाज़ार, बेकरी, स्टोर, टेनिस कोर्ट, प्रिंटिग प्रेस, विशाल चर्च, और शानदार बंगले और अस्पताल आदि है।

यह यात्रा बहुत संतोषप्रदायक एवं ज्ञानप्रदायक रही।

महिला सशक्तीकरण में माध्यमों की भूमिका

प्रियदर्शन
वैज्ञा/इंजी-एसएफ, पीएसएमडी

1. भूमिका

मानव जीवन का प्रारंभ पुरुष और प्रकृति के मिलन से हुआ है एवं इसकी इतिहास-गाथा में पुरुष एवं स्त्री दोनों का बराबर का योगदान रहा है। परंतु मानव जीवन के विकास की इस यात्रा में कुछ नियम-कानून बनाए गए ताकि सामाजिक जीवन सुचारू रूप से चल सके। विडंबना यह है कि इन नियमों एवं कानूनों का स्वरूप प्राय: पितृसत्तात्मक या पुरुष-प्रधान ही रहा तथा स्त्रियों के ऊपर कई प्रकार के सामाजिक-नैतिक प्रतिबंध थोप दिए गए। आधुनिक समाज में अनायास ही महिलाओं को उनके वास्तविक अधिकार दिलाने के प्रयास किए जाने लगे। उनके जीवन-स्तर को पुरुषों के बराबर लाने के प्रयास किए जाने लगे। इन उपायों को ही दूसरे प्रकार से महिला सशक्तीकरण कहा जाने लगा।

महिला सशक्तीकरण की सफलता सुनिश्चित करने के कई कारक हो सकते हैं। इस लेख के द्वारा हम उन कारकों में से एक, माध्यमों अथवा मीडिया, की भूमिका की चर्चा करनेवाले हैं।

वस्तुत: मीडिया अथवा माध्यम एक ऐसा साधन है जिसके द्वारा एक व्यक्ति अन्य व्यक्तियों तक अपने भावों, अपनी बातों को संप्रेषित कर पाता है। इन माध्यमों में पत्र-पत्रिका, नाटक, सिनेमा, दूरदर्शन, रेडियो प्रमुख हैं। इनके अलावा पिछले लगभग एक दशक से ज़्यादा समय में इंटरनेट एवं सामाजिक माध्यमों (Social Media) का प्रयोग काफी हद तक बढ़ा है। आइए निवेचना करें कि इन माध्यमों की महिला सशक्तीकरण में कितनी भूमिका है।

2. मीडिया के प्रकार

मीडिया या माध्यम कई प्रकार के हैं- प्रिंट, श्रव्य, दृश्य, इंटरनेट एवं सोशल मीडिया। प्रिंट मीडिया के अंतर्गत पत्र-पत्रिकाएं, अखबार, कहानियां, उपन्यास, कविताएं तथा अन्य प्रकाशन प्रमुख हैं। श्रव्य में रेडियो तथा दृश्य में टेलिविज़न, सिनेमा, नाटक इत्यादि प्रमुख हैं। सोशल मीडिया, जो इंटरनेट पर आधारित होते हैं, के अंतर्गत फेसबुक, ट्विटर, व्हाट्सएप, इंस्टग्राम इत्यादि प्रमुख हैं।

3. समाज में मीडिया की भूमिका

आधुनिक विज्ञान के आविष्कार से पहले संप्रेषण के माध्यमों में से व्यक्तिगत

तौर पर संप्रेषण एवं नाटक इत्यादि के मंचन के द्वारा भावनाओं का आदान-प्रदान होता रहा। इन माध्यमों में अन्य बातों के अलावा धार्मिक कथा-कहानियों का मंचन तथा संवाद होता रहा। इनमें देवी-शक्ति की महत्ता भी शामिल होती थी। इससे एक ओर मानव जीवन में स्त्रियों की महत्ता तो प्रदर्शित होती थी। परंतु, इन्हीं माध्यमों में पुरुष-प्रधान सामाजिक मूल्यों का भी प्रतिपादन हुआ करता था। इसके कारण से, जहां वैदिक काल में स्त्रियां सम्माननीय स्थान पाती थीं, मध्यकालीन युग तक आते-आते वो प्राय: वस्तु की तरह व्यवहार होने लगीं।

प्रिंट मीडिया के प्रादुर्भाव से कहानियां, पत्र-पत्रिकाएं भी वर्तमान समाज का चित्रण करती आईं। सिनेमा, दूरदर्शन इत्यादि भी उस समय के समाज का चित्रण ही करते आए। ऐसे में भी जह महान नारियों की कहानियां सुनाई-दिखाई गयीं तो उसका सकारात्मक प्रभाव समाज पर पड़ा। रानी लक्ष्मीबाई, अहिल्याबाई होल्कर, सावित्री बाई फुले, सरोजिनी नायडू, एनी बेसेंट, अरुणा आसफ अली इत्यादि की गाथाओं ने महिलाओं को अधिकाधिक शिक्षा, रोज़गार, मताधिकार आदि प्रदान करने में महती भूमिका अदा की। आजकल सोशल मीडिया एवं सिनेमा एक तरफ तो आधुनिक जीवन तथा आधुनिक सामाजिक सोच की ओर हम सब को उन्मुख करता है, तो दूसरी और अश्लील सामग्रियों के प्रचार-प्रसार में भी भूमिका निभाता जा रहा है, जो महिला सशक्तीकरण के प्रयासों में अवमंदक सिद्ध होता है। अगर गहराई से विवेचना करें तो हम पाएंगे कि समाज में महिलाओं के योगदान को उजागर करने तथा महिलाओं द्वारा सामाजिक दायित्व के निर्वहन तथा उनके द्वारा लिए जा सकने वाले निर्णयों के साकारात्मक पहलुओं के प्रचार-प्रसार में इन माध्यमों या मीडिया की बहुत बड़ी भूमिका हो सकती है ताकि महिला सशक्तीकरण के प्रयासों की बलवती किया जा सके।

4. नारी सशक्तीकरण में मीडिया की भूमिका

महिला सशक्तीकरण की दिशा में किए जा रहे या किए जानेवाले प्रयासों में सर्वोपरि है शिक्षा की सुलभता एवं व्यापकता। अकेले शिक्षा में ही वह शक्ति है जिससे सामाजिक मूल्यों, सोच-विचार तथा सामुदायिक विमर्श की गति बदली जा सकती है। महिला सशक्तीकरण की दिशा में काम करनेवाली प्रणेत्रियां हो या इस प्रयास में आनेवाले प्रणेता सबने महिलाओं की शिक्षा पपर सर्वाधिक ज़ोर दिया। अहिल्याबाई होलकर, सावित्रिबाई फुले, सरोजिन नायडू इत्यादि ने शिक्षा के ही दम पर अपना मुकाम स्थापित किया और अन्य को भी प्रेरित किया। कहते हैं कि एक महिला को शिक्षित करने से पूरा परिवार शिक्षित एवं जागरूक होता है।

अत: मीडिया या माध्यमों का सर्वाधिक ज़ोर महिलाओं की शिक्षा के प्रचार-प्रसार एवं उनसे जुड़े अधिकारों एवं कर्तव्यों के प्रति जनजागरूकता फैलाने के लिए होना चाहिए। विभिन्न नाटकों, फिल्मों, वृत्तचित्रों के द्वारा महिलाओं को सशक्त करने के उपायों पर चर्चा होनी चाहिए तथा उनके उत्पीड़न के सभी रास्तों को बंद करने के प्रयासों पर ज़ोर देना चाहिए। दृश्य-श्रव्य माध्यमों तथा सोशल मीडिया पर ऐसे अभियान चलाए जाने चाहिए जिससे समाज में महिला सशक्तीकरण की आवश्यकता महसूस हो तथा उनके उपायों की जानकारी साझा हो सके।

हमें मालूम है कि महिला सशक्तीकरण की दिशा में कई सरकारी योजनाएं भी चलाई गई हैं- यथा 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ', सुकन्या योजना, गृहलक्ष्मी योजना इत्यादि। इन योजनाओं के प्रबंधन में तथा इसके प्रचार-प्रसार में माध्यमों की महती भूमिका है। इसके माध्यम से लाभान्वितों की पहचान, उन्हें सुविधाएं मुहैय्या कराने तथा वंचितों की संख्या में कमी लाई जा सकती है।

महिला सशक्तीकरण की दिशा में महिलाओं की स्वास्थ्य संबंधी ज़रूरतों को पूरा करने की जुगत भी महती भूमिका निभाती है। वर्षों से हमने देखा है कि स्वास्थ्य संबंधी जनजागरण अभियान टेलिविज़न, रेडियो, फिल्मों या नाटकों के माध्यम से जनता तक प्रसारित किए गए हैं। 'हम दो हमारे दो' या जच्चा-बच्चा स्वास्थ्य या गर्भनिरोधक उपायों पर चर्चा इन माध्यमों के द्वारा ही व्यापक हो पाई है। परंतु, अभी भी काफी कुछ करने को बाकी है। अभी भी समाज में महिला भ्रूण हत्या, लिंग चयन इत्यादि कुरीतियां व्याप्त हैं, जिन्हें माध्यमों के द्वारा जनजागरण अभियान व्यापक रूप में चलाकर कम किया जा सकता है।

हमने अक्सर देखा है कि महिलाओं के पहनावे, उनके व्यवसाय इत्यादि पर नकारात्मक बातें फैलाई जाती रही हैं। माध्यमों के इस्तेमाल से हम इन बातों से संबंधित प्रेरक प्रसंगों से तथा जन जागरूकता अभियानों से नियंत्रण पा सकते हैं। दहेज उन्मूलन की दिशा में माध्यमों की भूमिका सराहनीय रही है। परंतु, दहेज-प्रथा अभी भी व्यापक रूप से सामाजिक महत्व पाई हुई है। ऐसे में हमारा प्रयास होना चाहिए कि लोगों को, विशेषकर नई पीढ़ी को, उनमें भी नई पीढ़ी के पुरुषों को इस बात की जागरूकता प्रदान की जाए कि दहेज न लें। अकेले दहेज-प्रथा की समाप्ति से नारियों के उत्पीड़न को कई गुणा कम किया जा सकता है।

सोशल मीडिया के प्रार्दुभाव के बाद महिलाओं के उत्पीड़न भी तकनीक पर आधारित हो गई है। आए दिन, महिलाओं की अश्लील तस्वीरें, फिल्में, पोर्नोग्राफिक फिल्में सोशल मीडिया पर प्रचलित होती रहती हैं। सोशल मीडिया का खतरा यह है कि इसके द्वारा किसी भी चीज़ का प्रसार बहुत तेज़ी से होता है। ऐसे में हमारे प्रयास होने चाहिए कि सोशल मीडिया से संबंधित नियामक कानूनों को सुदृढ़ कर ऐसी अश्लीलता के प्रसारण को रोका जाना चाहिए। इसके अलावा इन्हीं सोशल मीडिया को इनके दुष्परिणामों के बारे में भी जागरूक बनाने के लिए संवेदनशील तथा ज़िम्मेदार बनाना चाहिए।

महिला सशक्तीकरण की दिशा में कई वैधानिक अधिकारों की भी आवश्यकता है। कई आंदोलनों के बाद कई राज्य सरकारों ने स्थानीय निकायों में महिलाओं को 33% से 50% तक आरक्षण प्रदान किया है जिससे इन निकायों में महिलाओं की सहभागिता काफी हद तक बढ़ी है तथा ये चुनी हुई महिलाएं नारी सशक्तीकरण के प्रयासों को बलवती करने में प्राय: अधिक सक्षम हो पाई हैं। संसद तथा विधानसभाओं में भी महिला आरक्षण के लिए आंदोलन हुए हैं, परंतु इसको असली जामा पहनाने में अभी तक सफलता नहीं मिली है। नीति-निर्धारकों पर इस बाबत विचार-विमर्श करने तथा आवश्यक कानून बनाने का दबाव डालने में मीडिया बहुत कारगर भूमिका अदा कर सकता है। ऐसा नहीं है कि प्रयास नहीं हुए हैं, परंतु प्राय: ये प्रयास नाकाफी रहे हैं। अत: इन प्रयासों को बलवती करने की आवश्यकता प्रबल है।

5. उपसंहार

वास्तव में, अगर गौर करें तो पाएंगे कि महिलाओं के दमन तथा महिलाओं के उत्पीड़न के कारण ही नारी सशक्तीकरण की आवश्यकता महसूस हुई है। ऐसे देश में जहां "रमंते तत्र देवता यत्र नार्यस्य पूज्यंते" की परिकल्पना हो, वहां नारी सशक्तीकरण की ज़रूरत होना ही अपने-आप में अभिशाप है। तथापि, नारी सशक्तीकरण का उद्देश्य प्राप्त किया जा सकता है और अवश्य प्राप्त किए जा सकता है। बशर्ते हम नारियों की शिक्षा, स्वास्थ्य, नौकरी-पेशा, रोज़गार-व्यवसाय, सामाजिक-आर्थिक-राजनैतिक अधिकारों की आवश्यकता पर ध्यान दें तथा इन सबसे सर्वोपरि एक ऐसे समाज की रचना कर सकें, जहां नारियां अपने जीवन से जुड़े निर्णय स्वयं कर सकें, तभी नारी सशक्तीकरण संपूर्ण हो पाएगा। इन सबसे बढ़कर, हमारे इन प्रयासों में विभिन्न मीडिया या माध्यमों की भूमिका अति महत्वपूर्ण है। ये माध्यम हमारी सोच को, हमारी अवधारणाओं को तथा हमारे कृत्यों को उस दिशा में मोड़ने तथा पहुंचाने का माद्दा रखते हैं जहां पर हम कह सकें कि हमारे समाजा में पुरुष एवं स्त्रियां सभी रूपों में बराबर है-क्षमताओं में, अवसरों में तथा कृत्यों में। ये माध्यम एक अच्छे शिक्षक की तरह इस दिशा में हमारा मार्गदर्शन कर सकते हैं, ऐसा मेरा पूर्ण विश्वास है।

आइए, परिकल्पना करें एक ऐसे समाज की जहां नारी-पुरुष एक-दूसरे से कंधे से कंधे मिलाकर अपने कर्तव्य-पथ पर अग्रसर हों तथा नारी सशक्तीकरण जैसे मुद्दे उठाने की ज़रूरत ही न पड़े।

रोहित गुप्ता
वैज्ञा/इंजी-एसडी, एआईएस

फातिमा शेख: पहली मुस्लिम महिला शिक्षिका

फ़ातिमा शेख एक महान समाज सुधारक एवं शिक्षिका थीं जिन्होंने वंचितों एवं महिलाओं को शिक्षा के द्वारा आत्मनिर्भर बनाने में एक अहम् योगदान दिया। इनका जन्म 9 जनवरी, 1831 के महाराष्ट्र के पुणे में हुआ था। उस ज़माने में महिला शिक्षा को कोई महत्व नहीं देता था। महिलाओं को घरों की चारदिवारी में रखा जाता था एवं उन्हों पढ़ने की अनुमति नहीं थीं। ऐसी स्थिति में उन्होंने देश में शिक्षा की अलख जगाई। भारतीय महिलाओं की आइकॉन फातिम शेख को पहली मुस्लिम शिक्षिका तो माना ही जाता है साथ ही साथ महान समाज सुधारक के रूप में भी पूरे विश्व में जाना जाता है। 1848 में उन्होंने फुले दंपति की मदद से अपने ही घर में पुस्तकालय की स्थापना की जो कि लड़कियों के लिए भारत के प्रथम संस्थानों में से एक था। उन्होंने ज्योतिबाराव फूले व सावित्रीबाई फुले को अपने साथ लिया। कुछ कट्टरपंथियों को महिलाओं को शिक्षित करने की इनकी मुहिम पसंद नहीं आ रही थी इसलिए इन दोनों को घर से बाहर निकाल दिया गया था। उस वक़्त फतिमा शेख ने इन दोनों को न सिर्फ अपने घर में रहने की जगह दी बल्कि उन्होंने लड़कियों की शिक्षा के लिए पुणे में स्कूल खोलने के लिए जगह भी दी। बाद में उन्होंने कई विद्यालयों के निर्माण में सहयोग दिया एवं शिक्षा प्रदान की। वह शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए घर-घर जाकर बच्चों को बुलाती थीं। उनका मानना था कि लोग जाति व्यवस्था की बंदिशों को पार कर पुस्तकालय में आएं और पढ़ें। भारतीय इतिहास में वे एक खोई हुई शख़्सियत रही हैं। लेकिन आज इंटरनेट की जागरूकता ने उनके योगदान को पुनर्जीवित कर दिया है। हाल ही में उनके जन्मदिवस 9 जनवरी, 2022 को उन्हें 'google doodle' से सम्मानित किया गया।

एफ पी जी ए/असिक डिज़ाइन प्रवाह

आरती एल
वैज्ञा/इंजी-एसई, आरक्यूए

'फील्ड प्रोग्रामबिल गेट अरै (एफ पी जी ए)' इसरो के सभी इलेक्ट्रॉनिक प्रणालियों में शामिल एक प्रमुख एकक यूनिट है। इसरो में ही नहीं, नासा, जाक्सा, ईसा सभी स्पेस एजेंसियां इसका उपयोग करते हैं। रक्षा विभाग ओटोमोटीव विभाग सब इलेक्ट्रॉनिक्स में यह शामिल है। 'माइक्रो चिप', 'अट्मल', 'लाटिस' आदि एफ पी जी ए का प्रमुख टीलेर्स हैं।

'आप्लिकेशन स्पेसिफिक इंटिग्रेटड सर्किट' (अनुप्रयोग विशिष्ट एकीकृत परिपथ) है 'असिक'। जब एफ पी जी ए की अभिकल्पना (डिज़ाइन) पूरी होती है और बहुत संख्या में एफ पी जी ए का उपयोग किया जाता है, तब उसे असिक के रूप में रूपांतरण किया जाता है, क्योंकि एक एफ पी जी ए का दाम लाखों रुपयों में है। तो अगर सौ से अधिक एफ पी जी ए अनिवार्य है तो उस अभिकल्पना (डिज़ाइन) को असिक में बनाया जाता है।

एफ पी जी ए या असिक की अभिकल्पना (डिज़ाइन) विविध चरणों में होती है। कार्यकारी आवश्यकता दस्तावेज़ से यह शुरू होता है। एक एफ जी पी ए द्वारा जो-जो कार्य किया जाना, सबको इस दस्तावेज़ में रिपोर्ट किया जाता है। इसरो में इस रिपोर्ट का समीक्षा का दायित्व एक समीक्षा समिति पर है। उसके बाद डिजाइन इंजीनियर द्वारा सॉफ्टवेयर आवश्यकता दस्तावेज़ बनाया जाता है। जिसमें एफ पी जी ए सोफ्टवेयर की आवश्यकताओं का विवरण होता है। इसके बाद सोफ्टवेयर डिज़ाइन दस्तावेज़ की बारी है। ये सभी रिपोर्ट समीक्षा समिति में अभिकल्पक (डिज़ाइनर) द्वारा प्रस्तुत किए जाते हैं।

एफ पी जी ए की अभिकल्पना (डिज़ाइन) इसके बाद शुरू होती है। हर एक एफ पी जी ए विभाग के लिए अलग-अलग अभिकल्पना (डिज़ाइन) सॉफ्टवेयर है। माइक्रो चिप एफ पी जी ए के लिए लिब्रो सॉफ्टवेयर का इस्तेमाल किया जाता है। साइलिग्स एफपीजीए के लिए साइलिग्स विवाटो का इस्तेमाल किया जाता है। इन सोफ्टवेयर में एडिटर सिमुलेशन सामग्री, संश्लेषण सामग्री, विन्यास सामग्री सब शामिल हैं।

पहले सोफ्टवेयर चरण में डिज़ाइनर वी एच डी एल या वेरिलोग हार्डवेयर भाषा में कोड लिखा जाता एवं सिमुलेशन (अनुवर्तन) के द्वारा इस कोड का सत्यापन किया जाता है। मोडल सिम् क्वस्टा सिम्, वीसीएस इत्यादि नामक कई सिमुलेटर हैं। इस चरण में कोड की कार्यकारी आवश्यकताएं समय की जानकारी के बिना सत्यापन किया जाता है। अगर सब ठीक है तो हम संश्लेषण चरण में प्रवेश करते हैं। इस में

कोड जिस वीएचडीएल या वेरिलोग में लिखा गया था, उसे हार्डवेयर में रूपांतर किया जाताहै। पुन: सिमुलेशन करके सत्यापन करना अनिवार्य है। इस चरण में हार्डवेयर देरी। (प्रोपगेशन डिले) भी शामिल है। इसके बाद विन्यास किया जाता है। जिसके दौरान भी सिमुलेशन करना अनिवार्य है। लेकिन सिमुलेशन कई हफ्तों या महीनों में ही पूरा किया जा सकता है। इस चरण के अंत में एक प्रोग्रामिंग फाइल मिलता है। इस एफपीजीए प्रोग्रामर के उपयोग से हम एफ पी जी ए में प्रोग्राम कर सकते हैं। कुछ एफ पी जी ए सिर्फ में हम सिर्फ एक बार ही प्रोग्राम कर सकते हैं। जैसे, माइक्रोचिप के आन्टि फ्यूस एफ पी जी ए। कुछ एफ पी जी ए में हम पुन: प्रोग्राम कर सकते हैं- जैसे 'साइलिग्स एस राम' एफ पी जी ए।

अगर प्रत्येक एफ पी जी ए अधिक संख्या में चाहिए तो, उस असिक में रूपांतर कर लिया जाता है। डिज़ाइन और सिमुलेशन चरण एफ पी जी ए के समान ही है। लेकिन अगले चरण से थोडी विविधता है। क्योंकि असिक एक फाउण्डरी में ही बना सकता है। तैनाव में स्थित यू एम सी भारत के एस सी एल चण्डिगढ़ ये सब कुध प्रमुख फाउणडरी हैं, जहां असिक बनाया जा सकता हैं। हर एक फाउण्टरी का अपना सॉफ्टवेयर है। हम उस सॉफ्टवेयर के माध्यम से ही डिज़ाइन बना सकते हैं।

इसरो में सिमुलेशन चरण के बाद डिज़ाइन का सत्यापन करके एस सी एल को दिया जाता है। एस सी एल में बाद के चरण पूरे किए जाते हैं।

हर एक एफ पी जी ए या असिक की गुणवत्ता महत्वपूर्ण है। इसरो में सॉफ्टवेयर गुणवत्ता विभाग यह कार्य करता है। सॉफ्टवेयर कोड का निरीक्षण करके कोड निरीक्षण रिपोर्ट बनाया जाता है। उसके बाद मोड्यूल स्तर पर परीक्षण करके मोड्यूल स्तर परीक्षण रिपोर्ट बनाया जाता है। संश्लेषण और विन्यास का भी सत्यापन गुणवत्ता विभाग के इंजीनियर द्वारा किया जाता है। एफ पी जी ए की प्रोग्रामिंग भी गुणवत्ता विभाग के इंजीनियर के द्वारा से ही होता है। एफ पी जी ए को पूरा प्रणाली में संलग्न करके पूरी प्रणाली का भी परीक्षण होता है।

डिज़ाइन (वी एच डी एल/वेरिलोग)

↓

संश्लेषण

↓

विन्यास

↓

प्रोग्राम फाइल

↓

एफ पी जी

इस प्रकार एफ पी जी ए या असिक आज के सभी इलक्ट्रॉनिक प्रणालियों की प्रमुख इकाई है। यह माइक्रो प्रोफेसर के साथ मिलकर सारा नैविगेशन/गाइडेन्स/कंट्रोल का काम करता है।

"अच्छे लोग और अच्छी किताबें तुरंत समझ में नहीं आते, उन्हें पढ़ना पड़ता है।"

"जो विद्यार्थी प्रश्न पूछता है वह सिर्फ पांच मिनट के लिए मूर्ख रहता है,
लेकिन जो पूछता ही नहीं वह हमेशा के लिए मूर्ख रहता है।"

"जो पढ़ाई आज आपको दर्द लग रही है, अगर इस दर्द को झेलते रहो
तो कल ये दर्द आपकी सबसे बड़ी ताकत बन जाएगी।"

शिक्षा : नव युग की नई चुनौतियां

सोनी मोहन
वैज्ञा/इंजी-एसई, आईएसपीई

जैसै गाँधीजी ने कहा है कि एक मनुष्य का बौद्धिक और मानसिक विकास होना शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए। अपने पौराणिक भारत में भी शिक्षा का लक्ष्य था। पुराने ज़माने में गुरुकुल शिक्षा प्रणाली थी। छात्र अपने घर छोड़कर एक गुरु के अधीन होकर शिक्षा प्राप्त करते थे। इस शिक्षा में एकाग्रता होती थी। गुरु के प्रति काफी श्रद्धा थी। बिना कोई ब्लैक बोर्ड या अन्य उपायों के छात्र गुरु के मुँह से सीधा सुनते और पढ़ते थे। इससे उनकी स्मृति काफी अच्छी होती थी। गुरु से छात्र जीवन की पढ़ाई भी करते थे। धार्मिक शिक्षा भी उन्हें मिलती थी।

अंग्रेज़ों के भारत आते ही भारत की शिक्षा प्रणाली में काफी अंतर आया। अंग्रेज़ी की पढ़ाई शुरू हुई। अंग्रेज़ी स्कूल आरंभ हुए। गुरुकुल पढ़ाई का अंत हो गया। इस तरह भारत में शिक्षा प्रणाली का रूपांतर हुआ। पढ़ाई में प्रतियोगिता की भावना बंध गई है। दूसरों को हराकर प्रथम श्रेणी पहुंचना पढ़ाई का लक्ष्य बन गया है। परीक्षा में अंक प्राप्त करना शिक्षा का लक्ष्य हो गया है। इस कारण छात्र बिना समझे परीक्षा में अंक प्राप्त करने के लिए पढ़ते हैं। यही नहीं धार्मिक शिक्षा के अभाव में छात्र एक दूसरे के शत्रु बन जाते हैं। जीवन में अगर कोई कठिनाई आए तो वे सामना करने की क्षमता नहीं रखते हैं।

कोरोना के युग के बाद शिक्षा प्रणाली काफी बदल चुकी है। दो साल बच्चों ने घर बैठकर शिक्षा प्राप्त की है। इस दौरान कंप्यूटर, टैब, मोबाइल आदि के उपयोग से शिक्षा हुई है। इसके कई दोष हैं। छात्र एक दूसरे से मिल नहीं सके। वे एक दूसरे के साथ खेल नहीं सके। माता-पिता काम के लिए बच्चों को अकेले छोड़कर जाते थे। इस कारण मोबाइल का

दुरुपयोग होता था। इन सब कारणों से बच्चों का मानसिक हालत बिगड़ गई थी। कई छात्रों में मानसिक बीमारियों के लक्षण दिखने लगे। यही नहीं, ज्यादा समय कंप्यूटर देखने के कारण उनकी आँखें खराब होने लगीं। खेल-कूद न होने के कारण बच्चों में मोटापा ज़्यादा हो गया जो भविष्य में उनके स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं होगा।

कोरोना के बाद बच्चे स्कूल और कॉलेज पहुंच गए। लेकिन क्या शिक्षा को चुनौतियां कम हुई हैं ? बिलकुल नहीं। इंटरनेट ने शिक्षा बनाया भी और बिगाड़ा भी। इंटरनेट की सहायता से आज कोई भी जानकारी आसानी से मिलती है। पर समस्या यह है कि वह जानकारी अपूर्ण और असत्य होने की संभावना ज़्यादा है। यही नहीं, कई प्रोजेक्ट पहले से इंटरनेट में उपलब्ध होता है। इसे चुराकर छात्र परीक्षा में प्रस्तुत करते हैं। इससे छात्र सही तरह से समझे बिना स्कूल और कॉलेज से बाहर होते हैं। इस कारण काम की जगह में वे अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाते हैं।

इंटरनेट के उपयोग के कारण छात्र पुस्तकों का कम उपयोग करते हैं। यह भी नई शिक्षा की चुनौती है क्योंकि पुस्तकों का ज्ञान बढ़िया होता है।

आजकल सरकार ने लड़के-लड़कियों को एक साथ पढ़ाई करने का सुझाव दिया है। इसके दोष और गुण दोनों हैं। सरकार को इस कारण स्कूलों को इस बात में निर्णय लेने का अधिकार देना चाहिए। मेरे हिसाब से चार कक्षा तक लड़के-लड़कियां साथ पढ़ सकते हैं। इसके बाद वे अकेले पढ़कर और फिर कॉलेज में साथ पढ़ सकते हैं।

भारत में अब शिक्षा का मापदंड परीक्षा में प्राप्त अंक है। यह सही नहीं है। प्रोजेक्ट और अज़ाइनमेंट देना चाहिए जिससे छात्रा कार्य समझे न केवल अंक के लिए पुस्तक को रट लें। मानसिक विकास के कार्य भी शिक्षा में होना चाहिए। विदेशों में भगवत् गीता का अध्ययन होता है। भारत में भी योग और भगवत गीता जैसे विषयों पर शिक्षा देनी चाहिए। इससे छात्रों का और मानसिक विकास होगा। जीवन का अर्थ समझना ज़रूरी है क्योंकि जब वे जीवन में संघर्ष का सामना करें तब वे निडर होकर उसका सामना करे।

नई युग की शिक्षा में एकाग्रता की कमी है। छात्र कई क्षेत्रों में अपना ध्यान देते हैं। इस कारण वे अवश्य एक स्थान में ध्यान नहीं दे पाते हैं। शिक्षा का उद्देश्य यह होना चाहिए कि हर छात्र की शक्ति और कमियां बाहर लाएं। ऐसा कोई भी नहीं होगा जिसमें कोई गुण या अभिरुचि न हो। अंक के आधार पर छात्रों को श्रेणी देने के बजाय उनके व्यक्तित्व के आधार पर श्रेणी देना बेहतर होगा। जैसे सचिन टेंडुल्कर पढ़ाई में पीछे थे पर क्रिकेट की दुनिया में उन्होंने भारत का नाम रोशन किया है। इस तरह हर छात्र में छिपी अभिरुचि को बाहर लाना शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए।

नव युग की शिक्षा में काफी खराबियां है। हमें नव युग के गुण स्वीकारकर पुराने युग की शिक्षा के गुण भी अपनाना चाहिए। जैसे अंग्रेज़ी में कहावत है - "ओल्ड इज़ गोल्ड" पुराने तरीके सोने के समान होते है। समय के साथ उसका मूल्य कम नहीं होता है। शिक्षा में प्रौद्योगिकी की ज़रूरत है लेकिन ज़्यादा भी होना नहीं चाहिए। छात्रों को अपनी अभिरुचि के अनुसार शिक्षा लेने का अवसर होना चाहिए। जर्मनी और रूस की तरह जैसे मातृभाषा में पढ़ाई करना भी लाभदायक होगा। क्योंकि आज की परिस्थिति में होशियार छात्र अंग्रेज़ी नहीं मालूम होने के कारण उच्च शिक्षा नहीं कर पाते हैं। आधुनिकता और पौराणिकता का मेल हो तो हम आज की शिक्षा प्रणाली की चुनौतियों को मिटा सकते हैं। अगर देश की शिक्षा प्रणाली अच्छी हो तो देश की नई पीढ़ी भी अच्छी होगी। इस तरह हमारा देश 'सारे जहां से अच्छा' बन पाएगा।

स्वर्ग की यात्रा

प्रेम प्रकाश
वरि.तकनीकी सहायक-ए, आरक्यूए

एक राजा थे जिनकी चार पत्नियां थीं। राजा को अपनी चारों रानियों - कामा, लक्ष्मी, मित्रा तथा चित्रा से अनुराग तो था किंतु एक समान न था। चौथी रानी 'कामा' से राजा सबसे अधिक स्नेह करते थे क्योंकि वह बहुत सुंदर थी। तीसरी रानी सुंदर तो न थी किंतु वस्त्रों, आभूषणों को पहनकर राजा को मोहित करती थी। लक्ष्मी से राजा कामा की अपेक्षा कम प्रेम करते थे। लक्ष्मी की अपेक्षा मित्रा से राजा कम स्नेह करते थे जो न तो सुंदर थी और न ही साज-सज्जा का उसे शौक था, और पहली रानी 'चित्रा' से राजा अल्पतम स्नेह करते थे क्योंकि वह अतिव्यस्क हो चुकी थी।

एक दिन राजा वन में आखेट के लिए गए हुए थे। वहां उन्हें एक अज्ञात कीट ने डंक मार दिया जिससे वे मूर्च्छित हो गए। सुरक्षा सिपाहियों ने उन्हें महल में लाया। वैद्य, तांत्रिकों ने लेप-औषध से राजा के उपचार करने की कोशिश की। राजा होश में तो आ गए। परंतु उनकी अवस्था अति गंभीर थी। उनके तंत्रिका तंत्र ने काम करना बंद कर दिया था। बड़े-बड़े दक्ष वैद्यों को दरबार में बुलाया गया परंतु वे ठीक न हो सके। अपने जीवन काल के आखिरी समय में पहुंच चुके थे।

राजा अपने अंतिम समय में अपनी धन-संपत्ति के विभाजन के विषय में सोचने लगे क्योंकि उनका कोई उत्तराधिकारी नहीं था। राजा ने अपनी पत्नियों को किए गए स्नेह के आधार पर अपनी संपत्ति का बँटवारा करना चाहा। साथ ही उन्होंने यह भी सोचा कि अपनी पत्नियों को भी एक-एक कर परखा जाए कि उनसे कौन अत्यधिक प्यार करता है।

राजा ने एक योजना बनाई। एक-एक कर अपनी चारों रानियों को अपने पास बुलाया। सर्वप्रथम उन्होंने चौथी रानी कामा को अपने पास बुलाया और कहा, "मेरे पास अब तीन दिन ही शेष बचे हैं और अब मैं स्वर्गलोक को जाने वाला हूं। कुछ वर्षों पूर्व एक साधू ने मुझे मंत्र दिया था जो हमें स्वर्गलोक तक की यात्रा करवा सकता है। परंतु उससे पूर्व हमें दारुण यंत्रणा सहन करनी होगी और वर्षों तक नर्क में व्यतीत करने होंगे। मैं तुम से सर्वाधिक प्रेम करता हूं इसलिए तुम्हें अपने साथ स्वर्ग लोक ले जाना चाहता हूं तो क्या तुम इसके लिए तैयार हो?"

कामा ने उत्तर दिया "हे स्वामी! मैं आपसे अपार स्नेह करती हूं परंतु अभी मैं युवती हूं।" भावना रहित स्वर में उसने कहा कि वह राजा के साथ मरना नहीं चाहती और वह चली गई।

राजा ने अपनी तीसरी रानी लक्ष्मी को अपने पास बुलाया और अपनी योजना अनुसार अपना वक्तव्य दोहराया। लक्ष्मी ने धीमे स्वर में कहा "मुझे इस बात से खुशी है कि आप स्वर्गलोक को जाना चाहते हैं किंतु मेरी अभिलाषा सदैव सुंदर वस्त्र और जेवरात पाने की रही है। मैं आपके साथ नहीं जा सकती।" फिर वो लौट गई।

अब दूसरी पत्नी मित्रा की बारी थी। राजा ने पुनः अपनी योजना दोहरायी। मित्रा ने कहा " हे प्रिय! मैं अधिक से अधिक आपके मरने तक आपके साथ रह सकती हूं। आपके अंतिम संस्कार भी मैं ही करवा सकती हूं। परंतु आपके साथ स्वर्ग तक की यात्रा नहीं कर सकती।"

राजा को लगा कि कोई भी तीन पत्नियां उनसे प्रेम नहीं करती। अब उन्होंने पहली अतिवयस्क पत्नी चित्रा को पास बुलाया। अपेक्षापूर्ण राजा ने उसे अपनी योजना सुनाई।

राजा की बात सुनकर मित्रा ने झटपट निःस्वार्थ भाव से कहा "सुख-दुख में मैं सदा आपके साथ हूं। मैं कहीं भी आपके साथ चल सकती हूं। कांटों भरी राह हो या मृत्यु की यात्रा। मुझे भी आप अपने साथ ले चलिए।"

इस बात को सुनकर राजा के चक्षु अश्रु से भर गए। उन्होंने रानी चित्रा से कहा "मैंने कभी तुमसे स्नेह नहीं किया परंतु अपने स्वामी की आज्ञा व आग्रह को तुमने कभी भी नहीं ठुकराया। तुम अति चरित्रवती हो और इसलिए मेरे संपूर्ण धन-संपदा की मालकिन केवल तुम हो।" इतना बोलकर राजा ने अपनी आँखें मूँद ली।

वास्तव में उपरोक्त कहानी मेरी, आपकी और सभी मनुष्यों की है, कुछ विकल्पों को छोड़कर।

चौथी पत्नी, कामा के समान है हमारा शरीर। जिसे हम खूब सजाते सँवारते हैं। केवल शरीर पर ही ध्यान देते हैं, उसकी खूबसूरती को निखारते रहते हैं। जबकि केवल आवश्यकता तक ही शरीर पर ध्यान देना चाहिए। मरने के बाद शरीर भी हमेशा साथ छोड़ देता है।

तीसरी पत्नी लक्ष्मी है- धन संपत्ति। जीवन पर्यंत हम धन-संपत्ति के अर्जन में लगे रहते हैं। अंततः मरणोपरांत में सब यहीं धरा पर रह जाते हैं जिसका भोग कोई और करता है।

दूसरी पत्नी के समान है - परिवार व मित्र। हमारे परिवार और मित्र जीवन का अभिन्न अंग होते हैं किंतु उनका साथ भी अंतिम संस्कार तक ही होता है और अंततः पहली पत्नी है-हमारा चरित्र व संस्कार जो कभी हमारा साथ नहीं छोड़ते। गुणवान व्यक्ति अपनी ख्याति मरणोपरांत भी चारों दिशाओं में फैलाते रहते हैं। अपने संस्कारों को अपनी अगली पीढ़ियों तक पहुंचा कर हम अपने समाज व देश के भविष्य की सफल कामना कर सकते हैं।

सीख - "चरित्र ही सब कुछ है।"

वी के सी की हिंदी गतिविधियाँ

विश्व हिंदी दिवस पुरस्कार वितरण समारोह 2022
अक्ष के 11 वें अंक का विमोचन

विकेसी में दिनांक 25-04-2022 को श्री के एस मणि सह-निदेशक, आईआईएसयू की अध्यक्षता तथा श्री प्रेमदास एम, उप निदेशक, सीएमएसई, श्री शिवसुब्रह्मणि एस, उप निदेशक, एमआईएसए एवं सहायक निदेशक, रा.भा की उपस्थिति में विश्व हिंदी दिवस के सिलसिले में आयोजित कार्यक्रमों के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए एवं मंचासीन वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा अक्ष के ग्यारहवें अंक का विमोचन किया गया।

श्री प्रेमदास एम, उप निदेशक, सीएमएसई द्वारा हिंदी कार्यशाला के सभी प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र वितरित किए गए।

वर्ष 2021-2022 के दौरान राजभाषा हिंदी के सर्वोत्तम कार्य निष्पादन के लिए पीजीए को सह-निदेशक महोदय द्वारा चल-वैजयंती से सम्मानित किया गया।

हिंदी कार्यशाला अप्रैल-जून, 2022 तिमाही

संघ सरकार की राजभाषा नीति के अनुसार राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से वर्ष 2022 की अप्रैल-जून तिमाही के लिए 13 जून, 2022 को आईआईएसयू तथा सीएमएसई के वैज्ञानिक इंजीनियर एसजी के लिए अर्धदिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें आईआईएसयू और सीएमएसई के विभिन्न अनुभागों से नामित किए गए 23 कार्मिकों ने भाग लिया।

उद्घाटन सत्र में श्रीमती लक्ष्मी जी, सहा.निदेशक (रा. भा), वीएसएससी ने अध्यक्ष महोदय श्री शिवसुब्रह्मणि एस, उप निदेशक एमआईएसए एवं संकाय सदस्य के रूप में आमंत्रित श्रीमती आर महेश्वरी अम्मा, भूतपूर्व उप निदेशक (राजभाषा), वीकेसी, तथा प्रतिभागियों का स्वागत किया। उन्होंने अपने स्वागत भाषण में हिंदी कार्यशालाओं के आयोजन के उद्देश्य पर प्रकाश डाला। तदुपरांत अध्यक्ष महोदय श्री शिवसुब्रह्मणि एस, ने कार्यशाला का औपचारिक तौर पर उद्घाटन किया। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने राजभाषा कार्यान्वयन की आवश्यकताओं पर बल देते हुए कहा कि हमें हिंदी में किए जाने वाले सरकारी कामकाज का निष्पादन संवैधानिक दायित्व की तरह करना चाहिए और यह प्रयास करना चाहिए कि ऐसी कार्यशालाओं से लाभान्वित होते हुए राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को अवश्य प्राप्त करें।

कार्यशाला में सत्र का संचालन करने के लिए आमंत्रित श्रीमती आर महेश्वरी अम्मा ने राजभाषा नीति की मुख्य बातों पर व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया और हिंदी अनुभाग द्वारा उससे संबंधित अध्ययन सामग्रियां भी प्रदान की गईं। सत्रांत में सभी प्रतिभागियों की ओर से श्री नवीन जी पाई ने कार्यशाला के आयोजन पर अपनी संतुष्टि व्यक्त की और संकाय सदस्यों एवं कार्यशाला के आयोजकों के प्रति आभार प्रकट किया। श्रीमती लक्ष्मी जी, सहायक निदेशक (रा.भा), के द्वारा औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यशाला समाप्त हुई।

हिंदी कार्यशाला जुलाई - सितंबर, 2022 तिमाही

संघ सरकार की राजभाषा नीति के अनुसार राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से वर्ष 2022, जुलाई- सितंबर तिमाही के लिए 22 जुलाई, 2022 को आईआईएसयू तथा सीएमएसई के विविध एन्टिटियों के फोकल पॉईन्टों के लिए एकदिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें आईआईएसयू और सीएमएसई के विभिन्न अनुभागों से नामित किए गए 24 कार्मिक भाग लिए।

उद्घाटन सत्र में अध्यक्ष महोदय श्री शिवसुब्रह्मणि एस, उप निदेशक एमआईएसए ने संकाय सदस्य के रूप में आमंत्रित श्री मनोज कुमार सहायक निदेशक (रा.भा) एवं श्रीमती लक्ष्मी जी, सहायक निदेशक (रा.भा), वीएसएससी, तथा प्रतिभागियों का स्वागत किया। उन्होंने अपने स्वागत भाषण में हिंदी कार्यशालाओं के आयोजन के उद्देश्य पर प्रकाश डाला। तदुपरांत अध्यक्ष महोदय श्री शिवसुब्रह्मणि एस, ने कार्यशाला का औपचारिक तौर पर उद्घाटन किया। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने राजभाषा कार्यान्वयन की आवश्यकताओं पर बल देते हुए कहा कि हमें हिंदी में किए जाने वाले सरकारी कामकाज का निष्पादन संवैधानिक दायित्व की तरह करना चाहिए और यह प्रयास करना चाहिए कि ऐसी कार्यशालाओं से लाभान्वित होते हुए राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को अवश्य प्राप्त करें।

कार्यशाला में प्रथम सत्र का संचालन श्रीमती लक्ष्मी जी ने किया। उन्होंने तिमाही प्रगति रिपोर्ट का महत्व एवं उसे भरने की विधि पर कक्षा का संचालन किया।

दूसरे सत्र में श्री मनोज कुमार ने राजभाषा नीति की मुख्य बातों पर व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया और उससे संबंधित अध्ययन सामग्रियां भी दी गईं। सत्रांत में सभी प्रतिभागियों की ओर से श्रीमती राधिका बाबु ने कार्यशाला के आयोजन पर अपनी संतुष्टि व्यक्त की और संकाय सदस्यों एवं कार्यशाला के आयोजकों के प्रति आभार प्रकट किया। श्रीमती लक्ष्मी जी, सहा.निदेशक. (रा.भा), के औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यशाला समाप्त हुई।

हिंदी पखवाड़ा समारोह- 2022 की रिपोर्ट

संघ सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन तथा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए इसरो के वट्टियूरकाव कॉम्प्लेक्स (वीकेसी) में दिनांक 19.09.2022 से 28.09.2022 तक हिंदी पखवाड़ा समारोह का आयोजन किया गया। राजभाषा विभाग एवं अंतरिक्ष विभाग द्वारा जारी किए गए दिशानिर्देशों का अनुपालन करते हुए इस समारोह के दौरान वट्टियूरकाव कॉम्प्लेक्स (वीकेसी) में स्थित इसरो जड़त्वीय प्रणाली यूनिट (आईआईएसयू) तथा सम्मिश्र एन्टिटि (सीएमएसई) के हिंदी भाषी एवं हिंदीतर भाषी कर्मचारियों और उनके विवाहितियों एवं बच्चों के लिए अलग-अलग रूप से हिंदी निबंध लेखन, हिंदी कहानी/ यात्रावृत्तांत लेखन, तस्वीर क्या बोलती है?, तकनीकी लेखन तथा कंप्यूटर पर हिंदी टंकण, गीत गायन, आशुभाषण, टिप्पण व आलेखन, प्रश्नोत्तरी एवं कवितापाठ प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। कर्मचारियों के विवाहितियों एवं बच्चों के लिए हिंदी निबंध लेखन, हिंदी कहानी लेखन, सुलेख, वाचन, देशभक्तिगान एवं कविता लेखन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। बड़ी संख्या में प्रतिभागियों ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में उत्साहपूर्वक भाग लिया।

हिंदी पखवाड़ा समारोह के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता कर्मचारियों, उनके विवाहितियों एवं बच्चों को नकद पुरस्कार, संबंधित कर्मचारियों के बैंक खातों में जमा किए गए। कुल 148 पुरस्कार प्रदान किए गए। इसके अलावा शैक्षिक वर्ष 2021-2022 के लिए कर्मचारियों के बच्चों में से 10 वीं कक्षा की अंतिम परीक्षा में हिंदी के लिए सर्वाधिक अंक प्राप्त कुमारी आनी होमर, सुपुत्री श्रीमती अर्चना वासुदेवन, वरि. परियोजना सहायक, आईआईएसयू लेखा को भी पुरस्कृत किया गया। सबको प्रमाणपत्र बाद में वितरित किए जाएंगे।

छमाही के दौरान वीकेसी में आयोजित अन्य कार्यक्रम

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2022

आईआईएसयू में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस (आईवाइडी) 2022 उत्साहपूर्वक मनाया गया। भारत सरकार की पहल के अनुसार, आईआईएसयू में 2 जून, 2022 से 20 जून, 2022 तक 'काउंटडाउन टु आईवाइडी' का आयोजन किया गया, जिसका उद्देश्य व्याख्यान और प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से आईआईएसयू के कर्मचारीयों को योग के लाभों के बारे में जागरूक करना और लोगों के बीच योग के बारे में ज्ञान का प्रसार करना था। इस कार्यक्रम का उद्घाटन श्री के एस मणि,सह-निदेशक, आईआईएसयू द्वारा 2 जून, 2022 को आईआईएसयू के सागर सम्मेलन कक्ष में किया गया था। उद्घाटन कार्यक्रम के दौरान 'समकालीन समय के लिए योग' पर एक व्याख्यान आयोजित किया गया था। काउंटडाउन कार्यक्रम के दौरान कर्मचारियों के लिए योग अभ्यास सत्र आयोजित किए गए। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2022 के अवसर पर 21 जून, 2022 को आईआईएसयू के कर्मचारियों द्वारा योगासन किए गए। इन कार्यक्रमों में बड़ी संख्या में कर्मचारी भाग लिए।

विश्व पर्यावरण दिवस समारोह 2022

विश्व में पर्यावरण के संरक्षण हेतु कदम उठाने और जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से संयुक्त राष्ट्र (यूएस) द्वारा 5 जून, 1974 को पहला विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया था। इस वर्ष 5 जून, 2022 को छुट्टी होने के कारण वीकेसी में 9 जून, 2022 को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया। मुख्य समारोह का उद्घाटन डॉ. डी साम दयाल देव, निदेशक, आईआईएसयू ने बालवृक्ष लगाकर किया। आईआईएसयू प्रबंधन परिषद के सदस्य और आईआईएसयू समुदाय के अन्य वरिष्ठ सदस्य भी आईआईएसयू परिसर के विभिन्न हिस्सों में पौधे लगाते हुए इस कार्यक्रम में शामिल हुए। अगले वर्ष सेवानिवृत्त हो रहे अधिकारी इस कार्यक्रम के विशेष अतिथि रहे। उन्होंने भी बालवृक्ष लगाकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

वीकेसी में रक्तदान कैंप

15, जून 2022, को विश्व रक्तदान दिवस के अवसर पर, वीएसएससी कर्मचारी हितकारी निधि (एसबीएफ) द्वारा एक रक्तदान कैंप का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में कई कर्मचारी भाग लिए एवं रक्तदान किया।

स्वतंत्रता दिवस समारोह 2022

वर्ष 2022, अगस्त 15 को आईआईएसयू एवं सीएमएसई में स्वतंत्रता दिवस मनाया गया। आईआईसयू के निदेशक महोदय डॉ. डी साम दयाल देव जी ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया। इस अवसर पर उनहोंने केऔसुब द्वारा प्रस्तुत परेड की सलामी भी ली। आईआईएसयू समुदाय का अभिसंबोधन करते हुए आईआईएसयू द्वारा अनुसंधान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में प्राप्त प्रगति के लिए सराहना व्यक्त किया। उन्होंने इसरो के विविध अभियानों में आईआईएसयू की प्रणालियों के निष्पादन दक्षता की प्रशंसा की। आईआईएसयू के सभी कर्मचारी अपने परिवार के सदस्यों के साथ मौजूद थे। पहली स्वचालित गगनयान कार्यक्रम के अर्ध-मानवी 'व्योमित्रा' का दर्शन परिवार के सदस्य एवं बच्चों ने बडे उत्सुकता के साथ किया।

ओणम समारोह

आईआईएसयू में वर्ष 2022 का ओणम समारोह बड़े धूम-धाम से आयोजित किया गया। कोरोना महामारी के कारण पिछले दो सालों से यह समारोह मनाया नहीं जा रहा था। यह माना जाता है कि तिरुवोणम के दिन महाराजा महाबली, जो किसी समय केरल पर राज करते थे, अपने प्रिय प्रजाओं से मिलने आते हैं।

समारोह का उद्घाटन श्री के एस मणि, सह-निदेशक आईआईएसयू द्वारा दीप प्रज्वलन से किया। इस अवसर पर उन्होंने यह बताया कि ओणम का संदेश आज के युग में भी कितना सुसंगत है। इसके अलावा श्री पॉल पांडियन, उप निदेशक, आरक्यूए, एवं श्री शिवसुब्रहमणि एस, उप निदेशक, एमआईएसए ने भी ओणम संदेश दिए।

उद्घाटन के बाद कर्मचारियों के लिए विविध प्रकार के सांस्कारिक कार्यक्रमों एवं खेल का भी आयोजन किए गए। इस साल के समारोह में अत्तप्पुक्कलम, परंपरागत सद्या, सामूहिक गीत गायन, तिरुवातिरा, म्यूसिकल चेयर, सुंदरिक्कु पोट्टु तोडाम, जैसे अन्य खेल भी आयोजित किए गए थे। विजेताओं को कच्चे नारियल से सम्मानित किया गया। सारा आईआईएसयू समूह इस अवसर पर बड़ी खुशी के साथ मौजूद था।

आईआईएसयू कैंटीन द्वारा तैयार किया गया स्वादिष्ट परंपरागत ओणम सद्या के साथ ओणम समारोह की परिसमाप्ति हुई।

हिंदी पखवाड़ा समारोह-2022 के विजेताओं की सूची

1. प्रियदर्शन

वैज्ञा/इंजी-एसएफपीएसएमडी, एआईएस

निबंध लेखन	प्रथम
तस्वीर क्या बोलती है ?	प्रथम
तकनीकी लेखन	प्रथम

2. दिनेश कुमार अग्रवाल

वैज्ञा/इंजी-एसई, पीएसएमडी, एआईएस

निबंध लेखन	द्वितीय
तस्वीर क्या बोलती है ?	द्वितीय
भाषण	तृतीय
तकनीकी लेखन	तृतीय
कवितापाठ	तृतीय
गीत गायन	सांत्वना
प्रश्नोत्तरी	सांत्वना

3. सर्वेश कुमार सिंह

तकनीकी अधिकारी-सी एलएमडी/बीएसटीजी

निबंध लेखन	तृतीय
कहानी/यात्रावृत्तांत	सांत्वना
तकनीकी लेखन	सांत्वना

4. प्रेम प्रकाश

वरिष्ठ तकनीकी सहायक-ए, आरक्यूए

कहानी लेखन/यात्रावृत्तांत	प्रथम
तकनीकी लेखन	द्वितीय
कवितापाठ	द्वितीय
तस्वीर क्या बोलती है ?	तृतीय
निबंध लेखन	सांत्वना
भाषण	सांत्वना
गीत गायन	सांत्वना
प्रश्नोत्तरी	सांत्वना

5. जगरूप

वैज्ञा/इंजी-एसई, आरक्यूए

भाषण	द्वितीय
निबंध लेखन	सांत्वना
कहानी लेखन/यात्रावृत्तांत	सांत्वना

6. आदित्य कुमार

तकनीकी सहायक, सीएमएडी/सीएमएसई

भाषण	प्रथम
कवितापाठ	प्रथम
गीत गायन	द्वितीय
प्रश्नोत्तरी	तृतीय
तस्वीर क्या बोलती है ?	सांत्वना

7. रोहित गुप्ता

वैज्ञा/इंजी-एसडी, एआईएस

गीत गायन	प्रथम
कहानी लेखन/यात्रावृत्तांत	तृतीय
तस्वीर क्या बोलती है ?	सांत्वना
भाषण	सांत्वना
तकनीकी लेखन	सांत्वना
कवितापाठ	सांत्वना

8. गौरव जोशी

वैज्ञा/इंजी-एससी, आईएसएसजी/आरक्यूए

कहानी लेखन/यात्रावृत्तांत	द्वितीय

9. सोनी मोहन

वैज्ञा/इंजी-एसई, आईएसपीई

निबंध लेखन	प्रथम
भाषण	प्रथम
तकनीकी लेखन	तृतीय

10. सी वी वीणा
वैज्ञा/इंजी-एसएफ, RQA

भाषण	प्रथम
निबंध लेखन	द्वितीय

11. वी पी प्रकाश
वरिष्ठ सहायक, आईआईएसयू प्रशासन

स्मृति परीक्षण	प्रथम
निबंध लेखन	तृतीय
गीत गायन	तृतीय
भाषण	सांत्वना

12. शिखा के आर
वरिष्ठ वैयक्तिक सचिव, एसआईएस

निबंध लेखन	सांत्वना
टिप्पण एवं आलेखन	सांत्वना

13. षीजा जोई
वरिष्ठ सहायक, आईआईसयू प्रशासन

टिप्पण एवं आलेखन	द्वितीय
भाषण	द्वितीय
निबंध लेखन	सांत्वना
स्मृति परीक्षण	सांत्वना
प्रश्नोत्तरी	सांत्वना

14. अर्चना वासुदेवन
वरिष्ठ परियोजना सहायक, आईआईएसयू लेखा

स्मृति परीक्षण	द्वितीय
कवितापाठ	सांत्वना

15. अभिनी जी एम
वैयक्तिक सहायक, एआईएस

स्मृति परीक्षण	तृतीय
हिंदी टंकण	सांत्वना

16. सेबिन ए एस
वरिष्ठ सहायक, आईआईएसयू लेखा

स्मृति परीक्षण	तृतीय

17. अंजना पी एस
वरिष्ठ सहायक, सीएमएसई प्रशासन

गीत गायन	प्रथम
स्मृति परीक्षण	सांत्वना
टिप्पण एवं आलेखन	सांत्वना

18. आशा ए एस
वरिष्ठ सहायक, सीएमएसई प्रशासन

टिप्पण एवं आलेखन	प्रथम
कविता लेखन	द्वितीय
स्मृति परीक्षण	सांत्वना
हिंदी टंकण	सांत्वना
प्रश्नोत्तरी	सांत्वना

19. आरती एल
वैज्ञा/इंजी-एसई, आरक्यूए

तकनीकी लेखन	प्रथम
कवितापाठ	तृतीय
स्मृति परीक्षण	सांत्वना

20. अनिला श्रीधर एस
वैयक्तिक सचिव, आईएसपीई

टिप्पण एवं आलेखन	तृतीय
हिंदी टंकण	तृतीय

21. स्मिता नायर एस वी
वैयक्तिक सचिव, एमईएफए, सीएमएसई

हिंदी टंकण	प्रथम

22. राधिका बाबु पी
वैयक्तिक सहायक, आईआईएसयू क्रय

हिंदी टंकण	द्वितीय
कविता लेखन	सांत्वना

23. संदीप दास
वैज्ञा/इंजी-एसई, एसआईएस

भाषण	तृतीय

24. शौभिक घोष
वैज्ञा/इंजी-एससी, एपीएनटीडी/एलवीआईएस
प्रश्नोत्तरी — द्वितीय
भाषण — तृतीय
तकनीकी लेखन — सांत्वना

25. जयगणेश ए
वैज्ञा/इंजी-एससी, सीसीटीडी, सीएमएसई
भाषण — सांत्वना

26. पी आर सरिता
वैज्ञा/इंजी-एसएफ, एआईएस
तकनीकी लेखन — द्वितीय

27. मनौवर अन्सारी
वैज्ञा/इंजी-एससी, आईएसपीई
कविता लेखन — प्रथम

28. नवीन जी पाई
वैज्ञा/इंजी-एसजी, एलएमडी/बीएसटीजी
प्रश्नोत्तरी — प्रथम
कविता लेखन — तृतीय

29. लेनिना एम एस
तकनीकी अधिकारी-डी, एसआईएस
कवितापाठ — प्रथम
कविता लेखन — सांत्वना
गीत गायन — सांत्वना

30. गिरराज गुप्ता
वैज्ञा/इंजी-एसएफ, ईटीएसडी/आरक्यूए
गीत गायन — द्वितीय

31. हर्षिल गुप्ता
वैज्ञा/इंजी-एससी, आरक्यूए
गीत गायन — तृतीय

32. संतोष कुमार जी
वैज्ञा/इंजी-एसडी, आईएसपीई
गीत गायन — सांत्वना

33. अभिलाष सकरिया
वैज्ञा/इजी-एसई, एलएमडी/बीएसटीजी
प्रश्नोत्तरी — प्रथम

34. शशिकुमार के के
वैज्ञा/इंजी-एससी, एपीएनटीडी/एलवीआईएस
प्रश्नोत्तरी — द्वितीय

35. संदीप कुमार शर्मा
वैज्ञा/इंजी-एसडी, सीएमएडी/सीएमएसई
प्रश्नोत्तरी — तृतीय

36. पंकज अग्रवाल
वैज्ञा/इंजी-एसएफ, सीएमएडी/सीएमएसई
प्रश्नोत्तरी — तृतीय

37. विजय साईकृष्ण
वैज्ञा/इंजी-एससी, सीएमएडी/सीएमएसई
प्रश्नोत्तरी — सांत्वना

38. सिजो पॉल्सन
वैज्ञा/इंजी-एससी, एलएमडी/बीएसटीजी
प्रश्नोत्तरी — सांत्वना

39. गोविंद जी नायर
तकनीशियन-डी, एचएमटीडी/बीएसटीजी
प्रश्नोत्तरी — सांत्वना

कर्मचारियों के विवाहितियों के लिए प्रतियोगिता

1. श्रीमती शुभी गोयल
पत्नी श्री दिनेश कुमार अग्रवाल, वैज्ञा/इंजी-एसई, पीएसएमडी, एआईएस

निबंध लेखन	प्रथम
कविता लेखन	द्वितीय
कहानी लेखन	सांत्वना

2. श्रीमती रिंपी कुमारी
पत्नी श्री प्रेम प्रकाश, वरिष्ठ तकनीकी सहायक-ए, आरक्यूए

निबंध लेखन	द्वितीय
कविता लेखन	तृतीय
काहनी लेखन	सांत्वना

3. श्री मधु बी, आशा ए एस
वरिष्ठ सहायक, सीएमएसई प्रशासन

कहानी लेखन	तृतीय
निबंध लेखन	सांत्वना

4. श्रीमती सदफ आरजू
पत्नी श्री मनौवर अन्सारी, वैज्ञा/इंजी-एससी, आईएसपीई

निबंध लेखन	तृतीय

5. श्रीमती रूपलता शर्मा डी
पत्नी श्री नवीन जी पाई, वैज्ञा/इंजी-एसजी, एलएमडी/बीएसटीजी

कविता लेखन	प्रथम
कहानी लेखन	द्वितीय

6. श्रीमती सोनिया गुप्ता
पत्नी श्री गिरराज गुप्ता, वैज्ञा/इंजी-एसएफ, ईटीएसडी/आरक्यूए

कहानी लेखन	प्रथम
निबंध लेखन	तृतीय
कविता लेखन	सांत्वना

7. श्रीमती दीपा ओ एस
श्री राजेंद्रन वी, वरिष्ठ तकनीशियन-ए, एआईएस की पत्नी

निबंध लेखन	सांत्वना

8. श्रीमती राखी सिंह
श्री प्रियदर्शन, वैज्ञा/इंजी-एसएफ, पीएसएमडी, एआईएस की पत्नी

निबंध लेखन	सांत्वना

कर्मचारियों के बच्चों के लिए प्रतियोगिता

1. मास्टर कौस्तुभ सिंह
श्री प्रियदर्शन, वैज्ञा/इंजी-एसएफपीएसएमडी, एआईएस का सुपुत्र

वाचन	द्वितीय
सुलेख	सांत्वना

2. मास्टर उर्जस्विन सिंह
श्री सर्वेश कुमार सिंह तकनीकी अधिकारी-सी एलएमडी/बीएसटीजी का सुपुत्र

देशभक्ति गान	सांत्वना

3. मास्टर जोयल षिजु
श्रीमती षीजा जोई, वरिष्ठ सहायक, सीएमएसई प्रशासन का सुपुत्र

कवितापाठ	तृतीय

4. मास्टर जोहान षिजु
श्रीमती षीजा जोई, वरिष्ठ सहायक, सीएमएसई प्रशासन का सुपुत्र

सुलेख	सांत्वना

5. मास्टर देवनारायणन एस
श्रीमती अनिला श्रीधर एस, वैयक्तिक सचिव, आईएसपीई का सुपुत्र

देशभक्ति गान	सांत्वना
वाचन	सांत्वना

6. कुमारी श्रीनिका दास
श्री संदीप दास, वैज्ञा/इंजी-एसई, एसआईएस की सुपुत्री

वाचन	सांत्वना
देशभक्ति गान	सांत्वना

7. मास्टर निवेद एन पाई
श्री नवीन जी पाई, वैज्ञा/इंजी-एसजी, एलएमडी/बीएसटीजी का सुपुत्र

वाचन	प्रथम
सुलेख	द्वितीय

8. मास्टर राहुल गुप्ता
श्री गिरराज गुप्ता, वैज्ञा/इंजी-एसएफ, ईटीएसडी/आरक्यूए का सुपुत्र

निबंध लेखन	प्रथम
कविता लेखन	प्रथम
कवितापाठ	द्वितीय

9. कुमारी रागिणी गुप्ता
श्री गिरराज गुप्ता, वैज्ञा/इंजी-एसएफ, ईटीएसडी/आरक्यूए की सुपुत्री

कवितापाठ	प्रथम
देशभक्ति गान	द्वितीय
कविता लेखन	द्वितीय
निबंध लेखन	तृतीय

10. मास्टर अजो एस जॉण
श्रीमती सेलिन मरिया सैमण, वैज्ञा/इंजी-एसई, आरक्यूए का सुपुत्र

निबंध लेखन	द्वितीय

11. कुमारी आन मरिया एस
श्रीमती सेलिन मरिया सैमण, वैज्ञा/इंजी-एसई, आरक्यूए की सुपुत्री

वाचन	सांत्वना
सुलेख	सांत्वना

12. कुमारी निधिना डी
सुपुत्री श्री राजेंद्रन वी, वरिष्ठ तकनीशियन-ए, एआईएस की सुपुत्री

निबंध लेखन	तृतीय
देशभक्ति गान	तृतीय

13. मास्टर फेबिन साजु
श्री मोहन पी, तकनीशियन-एफ, एबीएसजी/सीएमएसई का सुपुत्र

कविता लेखन	तृतीय
निबंध लेखन	सांत्वना

14. मास्टर फहद एन ए
श्री नौषाद ए, तकनीशियन-डी, आईएसपीई का सुपुत्र

देशभक्ति गान	प्रथम
निबंध लेखन	सांत्वना

15. कुमारी श्रीनंदा राजेश
श्री राजेश सी वी, तकनीशियन-जी, आईएसपीई की सुपुत्री

वाचन	तृतीय

16. मास्टर अदित नारायणन
श्री नारायणन एन, वरिष्ठ तकनीकी सहायक-ए, सीएमएडी-एसी का सुपुत्र

सुलेख	प्रथम
वाचन	तृतीय
कविता लेखन	सांत्वना

17. कुमारी जानेट जूबी
श्री जूबी एम ईपन, वरिष्ठ तकनीशियन-ए, टीएसडी/सीएमएसई की सुपुत्री

सुलेख	तृतीय
वाचन	सांत्वना
देशभक्ति गान	सांत्वना
कविता लेखन	सांत्वना

18. कुमारी आध्या अजय
श्री अजय कुमार, वैज्ञा/इंजी-एसएफ, सीएनडीटीडी/सीएमएसई की सुपुत्री

सुलेख	सांत्वना

कर्मचारियों के बच्चे जिन्होंने 10 वीं कक्षा (सीबीएसई) की अंतिम परीक्षा में हिंदी में सर्वाधिक अंक प्राप्त किए हैं। **कुमारी आनी होमर** सुपुत्री श्रीमती अर्चना वासुदेवन, वरिष्ठ परियोजना सहायक, आईआईएसयू लेखा - प्रथम

वी.के.सी. राजभाषा चल-वैजयंती

वर्ष 2021-2022 के दौरान राजभाषा हिंदी के सर्वोत्तम कार्य निष्पादन के लिए पीजीए, वीकेसी को सह निदेशक महोदय द्वारा चल-वैजयंती प्रदान की गई।

मूल काम हिंदी में करने हेतु पुरस्कार योजना, 2021-2022

अंतरिक्ष विभाग की राजभाषा प्रोत्साहन योजना (सोलिस) के तहत वर्ष 2021-2022 के लिए कार्यालयीन कार्य मूल रूप से हिंदी में करने हेतु वीकेसी (आईआईएसयू/सीएमएसई) के निम्नलिखित कर्मचारियों को नकद पुरस्कार प्रदान किए गए

आशा ए एस
वरिष्ठ सहायक
पीजीए, वीकेसी
विशेष पुरस्कार प्रथम

प्रकाश वी पी
वरिष्ठ सहायक
पीजीए, वीकेसी
विशेष पुरस्कार द्वितीय

श्रीलक्ष्मी एस
वरिष्ठ सहायक
आईआईएसयू भंडार
प्रथम

अश्वती एम वी
वरिष्ठ सहायक
सीएमएसई क्रय
प्रथम

अनीश वी बी
वरिष्ठ सहायक
निदेशक का कार्यालय
द्वितीय

दीपा एस आर
वरिष्ठ सहायक
आईआईएसयू लेखा
द्वितीय

उषा ओ के
वरिष्ठ परियोजना सहायक
आईआईएसयू लेखा
तृतीय

विजयमोहनन ए
वरिष्ठ परियोजना सहायक
आईआईएसयू लेखा
तृतीय

अब्दुल राफ के टी
वरिष्ठ तकनीकी सहायक-ए
आईएसपीई
तृतीय

अंबिका वी ए
वैयक्तिक सचिव
एमआईएसए
तृतीय

शोभा के एस
वरिष्ठ परियोजना सहायक
आईआईएसयू लेखा
तृतीय

सभी पुरस्कार विजेताओं को हार्दिक बधाइयां !

पाठकों की ओर से

दिनांक 25 मई, 2022 के ई-मेल द्वारा प्रेषित वीकेसी (आईआईएसयू/सीएमएसई) की अर्धवार्षिक हिंदी गृह-पत्रिका 'अक्ष' का 11 वां अंक विभाग में प्राप्त हुआ है। सादर धन्यवाद। पत्रिका में संकलित विभिन्न प्रकार के विषयों यथा कोविड महामारी से होनेवाले अहसास का वर्णन, जीवन में वनस्पति का महत्व, गणतंत्र का अर्थ इत्यादि के बारे में रोचक तरीके से प्रकाश डाला गया है। प्राय: इन सभी लेखों में सरल, सुबोध हिंदी का प्रयोग किया गया है, जो पाठकों के ज्ञानार्जन में सहायक सिद्ध होगा। साथ ही, पत्रिका में दी गई 'प्रशासनिक शब्दावली' और 'टिप्पणियां' भी प्रशासनिक क्षेत्र के कार्मिकों का अवश्य ही ज्ञान-वर्धन करेंगी।

इस पत्रिका के प्रकाशन में सहयोग प्रदान करने वाले सभी कार्मिकों को हार्दिक बधाई।

शत्रुघ्न, सहायक निदेशक (रा.भा.), अंतरिक्ष विभाग, बैंगलूर

दिनांक 25.05.2022 को आपके द्वारा भेजी गई हिंदी गृह पत्रिका 'अक्ष' के 11 वें अंक की ई-पत्रिका इस कार्यालय को प्राप्त हुई है। पत्रिका में प्रकाशित सभी आलेखों की गुणवत्ता उत्तम है। पत्रिका की साज-सज्जा आकर्षक है। 'अक्ष' के संपादकीय मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं।

डॉ टी विजय शेखर, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी, आईपीआरसी

"शिक्षा सबसे शक्तिशाली हथियार है, जिसे आप दुनिया को बदलने के लिए उपयोग कर सकते हैं।"

"समय और शिक्षा का सही उपयोग ही व्यक्ति को सफल बनाता है।"

"ज्ञान आपके दिमाग की खुराक है। इसलिए आपका कर्तव्य है कि आप अपने दिमाग को अच्छे से अच्छा ज्ञान प्रतिदिन देते रहें।"

अधिवर्षिता

नर्मदा रवीद्रन
वरिष्ठ परियोजना सहायक,
निदेशक का कार्यालय

जार्ज वी वर्गीस
वैज्ञानिक इंजीनियर -जी,
बीएसटीजी/एसआईएस

गोपाल एम एस
वैज्ञानिक इंजीनियर -एसई,
पीपीईजी, एमआईएसए

श्यामला एस
वैज्ञानिक इंजीनियर -जी,
आईएसएसजी/ आरक्यूए

अनिला वी
वैज्ञानिक इंजीनियर -एसजी,
एआईएसआईडी/एआईएस

रवींद्रन एन
वैज्ञानिक इंजीनियर -एसएफ,
ईटीएसडी/आरक्यूए

वेंकट रमण बी
वैज्ञानिक इंजीनियर -जी,
एलवीआईएस

देवानंद एन एस
वैज्ञानिक इंजीनियर -एस एफ,
सीएमडी-सिविल

रामराज बी
वैज्ञानिक-इंजीनियर- एसई,
एसएसजी/एसआईएस

सजि के साम
वैज्ञानिक-इंजीनियर- एसजी,
एमएसएईडी/एसआईएस

उषा कुमारी एल
वरिष्ठ परियोजना सहायक,
प्रशासन, वीकेसी

कुलदीप छकारा
वैज्ञानिक-इंजीनियर- जी,
एचआरसीजी/डीआईआर

स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति

आनंद बी
वैज्ञानिक-इंजीनियर- एसजी,
आईएसईपीजी/आईएसपीई

आईआईएसयू स्वागत करता है

मणाली शर्मा
वैज्ञानिक-इंजीनियर- एससी, एनएफएसजी/एलवीआईएस

अक्ष की संपादकीय टीम, वीकेसी के लिए आपकी कीमती सेवा की प्रशंसा करती है एवं आपको एक सुखमय, शांतिपूर्ण एवं स्वस्थ सेवानिवृत्त जीवन के लिए शुभकामनाएं देती है।

सुख

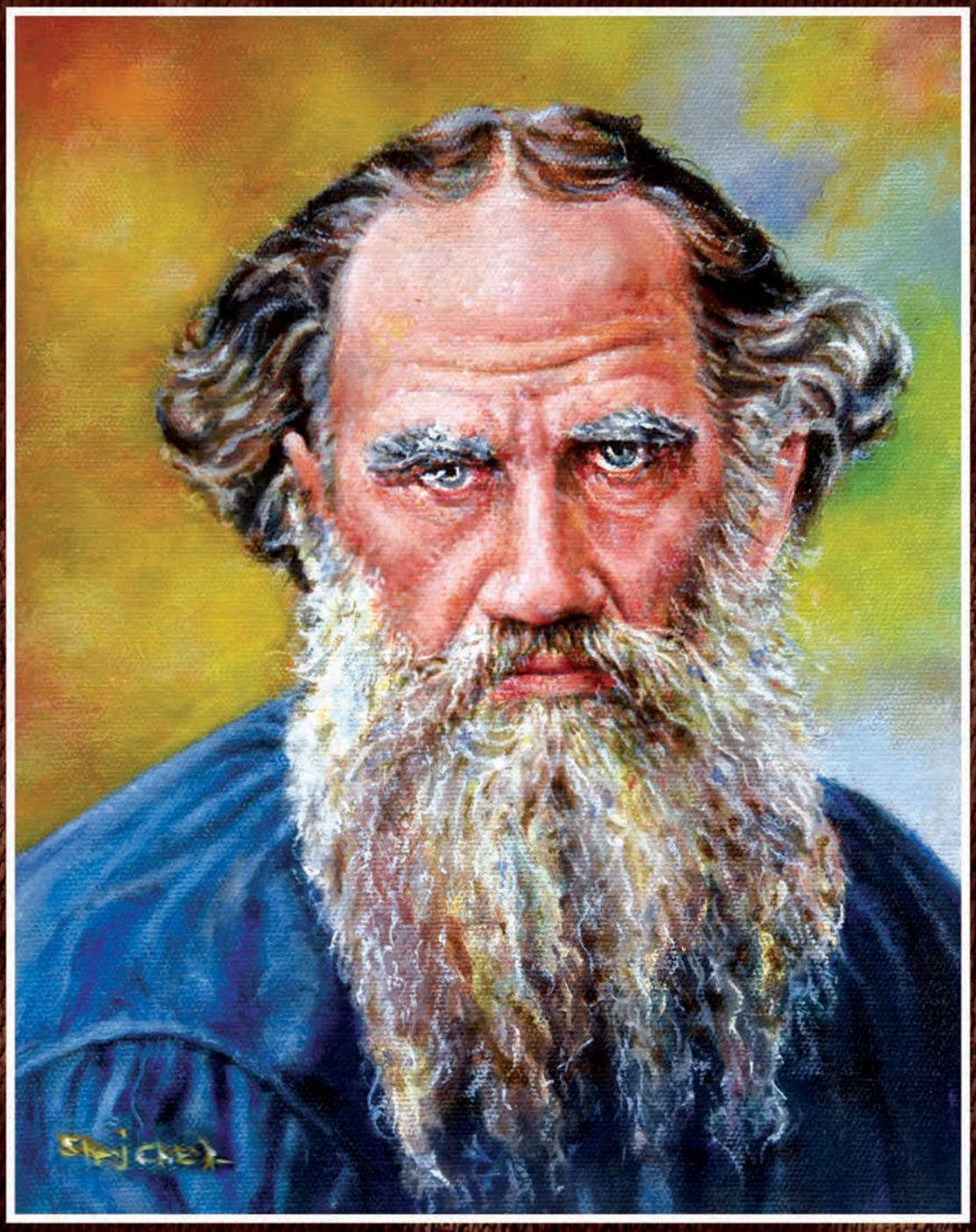

हिंदी अनुभाग, वीकेसी द्वारा प्रकाशित; मेसर्स भानु ऑफसेट, तंपानूर, तिरुवनंतपुरम में मुद्रित